डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय समाचारिकी
Dr. Sarvepalli Radhakrishnan Rajasthan Ayurved University Newsletter

जुलाई 2024 आयुर्वेदात्मकं ज्योतिः शाश्वतं नः प्रकाशताम्। वर्ष 7, अंक 01

आयुर्वेद विश्वविद्यालय में रक्तदान शिविर का आयोजन (विस्तृत समाचार पृष्ठ 04 पर)

इस अंक में ....

- छः दिवसीय आत्मरक्षा कार्यशाला का आयोजन
- नाड़ी परीक्षण विषयक राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन
- विश्वविद्यालय में एक मासीय विशिष्ट प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन
- कुलपति की उपमुख्यमंत्री एवं आयुष मंत्री, राजस्थान सरकार से शिष्टाचार भेंट
- अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस पर गत्यात्मक शशांक भुजंगासन अभ्यास का बना विश्व रिकार्ड
- एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत वृक्षारोपण

RAJBIL/2017/74087

कुलपति सन्देश ....

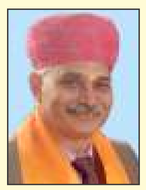

योगः कर्मसु कौशलम् कार्य में कौशल लाने हेतु योग के यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार धारणा, ध्यान और समाधि जैसे सार्वभौमिक, सार्वकालिक एवं सार्वजनीन नियम हमारे व्यक्तित्व, समाज और अन्ततः समग्र ब्रह्माण्ड को असाधारण रूप में रूपान्तरित करते हैं। जीवनदर्शन की यह प्रतिबद्धता आयुर्वेद पद्वति में भी प्राप्त होती है। यह दिव्यविद्या जनस्वास्थ्य के संरक्षण में तत्परा पद्वति है। दैवव्यपाश्रयीय, युक्तिव्यपाश्रयीय एवं सत्वावजयीय उपक्रम व्यष्टि से समष्टि निर्माण का अभूतपूर्व सेतु निर्मित करते हैं। ''गृहे–गृहे अनामयम्'' हेतु कृत संकल्प हमारे विश्वविद्यालय के परिश्रमी एवं सेवाभावी विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा विगत वर्ष में जोधपुर शहरी सीमा एवं सीमावर्ती गाँवों में अनेक निःशुल्क चिकित्सा शिविरों, नशामुक्ति शिविरों के आयोजन के साथ–साथ जोधपुर नगर के अनेक स्थानों पर नियमित ओपीडी सेवा भी प्रारम्भ की गयी है।

स्वर्णप्राशन की लोकप्रियता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि वर्तमान में बालोतरा को मिलाकर कुल ग्यारह स्थानों पर स्वर्णप्राशन की खुराक से बच्चे प्रत्येक मास पुष्य नक्षत्र में लाभान्वित हो रहे हैं। आगामी महीनों में इन केन्द्रों के और बढ़ने की सम्भावना है। पर्यावरण आज के समय का सबसे बडा मुद्दा हैं। पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता को व्यक्त करते हुए बड़ी संख्या में पादपों का रोपण किया गया है और इसके परिणामस्वरूप हमारे प्रयास अब हरितिम क्षेत्र के रूप में लक्षित हो रहे हैं। विश्वविद्यालय को एक बहुद्देशीय संस्थान के रूप में विकसित करने हेतु विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों के व्याख्यान आयोजित कर विश्वविद्यालय के शिक्षकों, कर्मचारियों एवं छात्र–छात्राओं के शैक्षणिक उन्नयन एवं व्यक्तित्व विकास हेतु मानव संसाधन विकास केन्द्र द्वारा अप्रतिम प्रयास किये गये हैं। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय के विद्वान् शिक्षकों ने भी देश भर में विभिन्न स्थानों पर अपने विद्वतापूर्ण व्याख्यानों से शोधार्थियों, विद्यार्थियों एवं आमजन को लाभान्वित किया है। विश्वस्तरीय पंचकर्म चिकित्सा केन्द्र की स्थापना के बाद विश्वविद्यालय निश्चित ही वैश्विक मानचित्र पर उभरेगा और मेडिकल टूरिज़्म के क्षेत्र में अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाएगा। विश्वविद्यालय के चहुँमुखी उन्नयन हेतु हमारा संकुल अहर्निश परिश्रम कर रहा है। योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा के क्षेत्र में अब तक चार विभिन्न योगाभ्यास से सम्बन्धित विश्व कीर्तिमान विश्वविद्यालय द्वारा स्थापित किये जा चुके हैं।

पुनः मैं आप सभी को दशम अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस की शुभकामनाएं प्रदान करता हुआ आप सभी के सुखद भविष्य की कामना करता हूँ।

प्रो. (वैद्य) प्रदीप कुमार प्रजापति
कुलपति

पंचकर्म परिचारक प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र वितरण

कुलपति प्रो. वैद्य प्रदीप कुमार प्रजापति ने 30 अप्रेल 2024 को आयुष कौशल विकास कार्यक्रम के तहत सफल पंचकर्म परिचारक प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए। इस अवसर पर कुलपति महोदय ने कहा कि रोजगार के क्रम में युवाओं में ये प्रशिक्षण उपयोगी सिद्ध होगा। कार्यक्रम में पंचकर्म विभागाध्यक्ष डॉ. ज्ञान प्रकाश शर्मा, सहायक प्रोफेसर डॉ. दिलीप व्यास, डॉ. गौरीशंकर, द्रव्य गुण विभाग से सहायक प्रोफेसर डॉ. नरेंद्र पुरोहित, पंचकर्म सहायक आशु सोनी मौजूद रहे।

गोदग्राम भटिंडा में निःशुल्क चिकित्सा शिविर आयोजित

दिनांक 30 अप्रेल 2024 को नियमित निःशुल्क चिकित्सा अभियान के अन्तर्गत से बच्चों और माताओं की स्वास्थ्य सुरक्षा से संबंधित शिविर का आयोजन किया गया। सह–नोडल अधिकारी डॉ. संजय श्रीवास्तव ने बताया कि इस दौरान डॉ. अवधेश शांडिल्य ने महिलाओं एवं बच्चों के स्वास्थ्य, स्वच्छता, तथा डॉ. अशोक यादव ने सुवर्णप्राशन एवं टीकाकरण, आहार एवं योग तथा मौसमी बीमारियों से बचाव पर व्याख्यान के माध्यम से आमजन को जानकारी दी। शिविर में एसिडिटी, कब्ज, स्त्री सम्बन्धी रोगों से पीड़ित 52 मरीजों को चिकित्सकीय परामर्श व निःशुल्क दवा वितरित की गईं।

स्नातकोत्तर पंचकर्म विभाग द्वारा वसंत ऋतु में वमन कर्म विषय पर विभागीय संगोष्ठी का आयोजन

स्नातकोत्तर पंचकर्म विभाग, पीजीआईए, जोधपुर द्वारा दिनांक 30 अप्रेल 2024 को वसंत ऋतु में वमन कर्म विषय पर एक विभागीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। पंचकर्म विभागाध्यक्ष डॉ. ज्ञान प्रकाश शर्मा ने बताया कि वमन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें विशेष रूप से कफ और पित्त दोष को शरीर के विभिन्न हिस्सों से पेट में लाया जा कर वमन कर्म के माध्यम से बाहर निकाल दिया जाता है। यह प्रक्रिया कफ और पित्त के विकारों के शमन हेतु महत्वपूर्ण है। यह आने वाली बीमारियों को रोकने में भी मदद करती है। इसके अलावा वमन कर्म पेट को शुद्ध करता है, जिससे भोजन और औषधियां ठीक से पचती हैं। वमन का उपयोग विशेष रूप से वसंत ऋतु में अधिक बढ़े हुए कफ

दोष को दूर करने के लिए किया जाता है। वमन अस्थमा, एलर्जिक ब्रोंकाइटिस, साइनुसाइटिस, माइग्रेन, मोटापा, एनोरेक्सिया, मधुमेह, त्वचा रोग, जोड़ों की सूजन, अवसाद, अधिक नींद, ऑटो इम्यून रोग आदि कई रोगों में फायदेमंद होता है। डॉ. दिलीप कुमार व्यास ने मरीजों को वसंत ऋतु में अपनाए जाने वाले आहार और जीवनशैली के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि वसंत ऋतु में शरीर की पाचन शक्ति कम होने के कारण खट्टे–मीठे रसों का सेवन अधिक करना चाहिए। वसंत ऋतु में कफ बढ़ने के कारण दिन में नहीं सोना चाहिए। इस मौसम में सभी को हल्का भोजन, गर्म पानी, जौ, सत्तू और शहद का सेवन करना चाहिए। डॉ. अचलाराम कुमावत ने बताया कि शास्त्रों के अनुसार वसंत ऋतु में शरीर में कफ की मात्रा बढ़ जाने के कारण वमन (उल्टी) करवाने का उल्लेख मिलता है। इस ऋतु में व्यायाम, उबटन, कवल तथा रूखा भोजन खाने का उल्लेख मिलता है।

निःशुल्क होम्योपैथी चिकित्सा शिविर आयोजित

यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ होम्योपैथी के विशेषज्ञ चिकित्सकों की टीम ने दिनांक 29 अप्रेल 2024 को सरदार पटेल पुलिस यूनिवर्सिटी में निःशुल्क होम्योपैथी चिकित्सा शिविर आयोजित किया, जिसमें चिकित्सालय अधीक्षक डॉ. वृषाली वराब्दे, सहायक आचार्य, डॉ. नरेन पटवा एवं सहायक रामेश्वर द्वारा सेवाएं दी गई। इस शिविर में 38 शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को निःशुल्क होम्योपैथिक औषधियां देकर लाभान्वित किया गया। डॉ. वृषाली बारब्दे ने विशेष रूप से मौसमी बीमारियों एवं बचाव, मधुमेह, अस्थमा, उच्च रक्तचाप, चर्म रोग, रक्त की कमी, बालों का गिरना तथा महिलाओं की माहवारी से सम्बन्धित जानकारी दी।

महिलाओं द्वारा सूक्ष्म व्यायाम व प्राणायाम का अभ्यास

कोणार्क गनर्स, 59 मिडियम रेजीमेंट आर्मी कैंट शिकारगढ़ जोधपुर में संचालित एक मासीय (50 घण्टे) योग प्रशिक्षण में प्रशिक्षणार्थी महिलाओं के लिए दिनांक 29 अप्रेल 2024 को यौगिक सूक्ष्म व्यायाम, ऊर्ध्व ताड़ासन, कटि चक्रासन, वक्रासन, उत्तानपादासन, मकरासन, मर्कट क्रिया, शलभासन, धनुरासन, शवासन, अनुलोम–विलोम एवं भ्रामरी प्राणायाम के शारीरिक एवं मानसिक प्रभावों के बारे में जानकारी के साथ साथ शास्त्रीय विधि से अभ्यास भी करवाया गया। शिविर का संचालन डॉ राकेश गुप्ता द्वारा किया गया।

आयुर्वेद विश्वविद्यालय के छात्रों ने जैव विविधता सम्बंधित जानकारी के लिए किया भ्रमण

आयुर्वेद संकाय के छात्र–छात्राओं ने दिनांक 28 अप्रेल 2024 को आईआईटी परिसर में चल रहे 3 दिवसीय जैव विविधता पर विश्व स्तरीय सिटी नेचर चैलेंज–2024 कार्यक्रम में भाग लिया। कुलपति प्रो. वैद्य प्रदीप कुमार प्रजापति ने प्रतिभागिता के बारे में बताते हुए कहा कि इस आयोजन का उद्देश्य शहर के लोगों को प्रकृति में रुचि दिलाना, अपने आस–पास प्रकृति का अवलोकन करना और उन्हें संरक्षित करने के लिए प्रोत्साहित करना है। आप सभी की भागीदारी इस वैश्विक पहल की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। द्रव्यगुण विज्ञान की सहायक आचार्य डॉ. निकिता ने बताया कि प्रातः काल 6:30 से 8 बजे तक सभी छात्र–छात्राओं ने आईआईटी परिसर में भ्रमण के दौरान विभिन्न प्रकार के पौधों, पक्षी, जीव– जन्तु आदि को देखा तथा चित्रों के साथ अपने अनुभव को नेचुरिस्ट ऐप पर साझा भी किया। भ्रमण के दौरान आईआईटी की प्रो. मानसी मुखर्जी एवं प्रो. मिताली मुखर्जी तथा आयुर्वेद विश्वविद्यालय से डॉ. प्रेम कुमार, आईआईटी एवं विश्वविद्यालय के छात्र–छात्राएं उपस्थित रहे।

यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ यूनानी टोंक एवं यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ होम्योपैथी, केकड़ी में सीपीआर प्रशिक्षण आयोजित

विश्वविद्यालय के मानव संसाधन विकास केन्द्र द्वारा यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ यूनानी, टोंक में 22 अप्रेल एवं यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ होम्योपैथी, केकड़ी में दिनांक 23 अप्रेल 2024 को कार्डियो पल्मोनरी रिससिटेशन प्रशिक्षण आयोजित किया गया। टोंक में कार्यक्रम में कुलपति प्रो. वैद्य प्रदीप कुमार प्रजापति मुख्य अतिथि एवं सीएचआरडी निदेशक डॉ. राकेश शर्मा विशिष्ट अतिथि थे। कुलपति ने प्रशिक्षण कार्यशालाओं का महत्व समझाया और आम लोगों को भी ऐसे प्रशिक्षण देने पर जोर दिया। सीपीआर विशेषज्ञ एसएन मेडिकल कॉलेज, जोधपुर के पूर्व प्रोफेसर डॉ. राजेंद्र तातेड़ ने दोनों कॉलेज और अस्पताल के शिक्षकों, छात्रों, डॉक्टरों और पैरामेडिकल स्टाफ को

सीपीआर पर प्रशिक्षित किया। उन्होंने बताया कि सीपीआर एक प्रकार की प्राथमिक चिकित्सा है जिसके माध्यम से किसी पीड़ित को सांस लेने में कठिनाई हो रही हो, दिल की धड़कन अचानक बंद हो गई हो, पानी में डूब रहा हो या श्वसन नली में कुछ फंस जाने की स्थिति में हो तो उसे तत्काल सीपीआर द्वारा आसानी से पुनर्जीवित किया जा सकता है। टोंक में प्राचार्य डॉ. मो. इरशाद खांन के नेतृत्व में सीएचआरडी ईकाई के कोआर्डिनेटर डॉ. सरफराज़ अहमद तथा डॉ. रिजवान एवं केकड़ी में प्राचार्य डॉ. पुनीत शाह के नेतृत्व में कोआर्डिनेटर डॉ. राजेश कुमार मीना एवं डॉ. आस्था माथुर ने कार्यक्रम का समन्वयन किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में दोनों महाविद्यालयों के शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

वैदिक मंत्रो पर दी योगासनों की प्रस्तुति

23 अप्रेल 2024 को अशोक उद्यान में चुनाव जागरुकता के अवसर पर यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ नेचुरोपैथी एंड योगिक साइंस की योग टीम ने विभिन्न प्रकार के वैदिक मंत्रों पर योगासनों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का उद्देश्य योगासनों के माध्यम से मतदान के प्रति आमजन को जागरुक करना था। इसके माध्यम से लोगों को स्वास्थ्य और लोकतांत्रिक कर्तव्यों के महत्व को भी समझाया गया। यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ नेचुरोपैथी एंड योगिक साइंस के प्राचार्य डॉ. चन्द्रभान शर्मा ने बताया कि विश्वविद्यालय के करीब पचास छात्र–छात्राओं ने विभिन्न पिरामिड बनाकर उद्यान में आने वाले लोगों को अलग–अलग आसनों द्वारा मतदान एवं लोकतंत्र के प्रति जागरुक किया। इसमें योगासनों के माध्यम से वोट फॉर नेशन का पिरामिड बनाकर मतदान के प्रति जागरुक किया गया।

राजकीय विद्यालय में जागरुकता शिविर आयोजित

दिनांक 22 अप्रेल 2024 को यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ होम्योपैथी के विशेषज्ञ चिकित्सकों की टीम की ओर से राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, फूलबाग में विश्व मलेरिया दिवस के अवसर पर जागरुकता शिविर आयोजित किया गया। होम्योपैथी चिकित्सालय अधीक्षक डॉ. वृषाली वराब्दे एवं शिविर प्रभारी डॉ. राजेश कुमार कुमावत ने बताया कि होम्योपैथी विशेषज्ञ चिकित्सक डॉ. सपना सालोदिया, डॉ. अंकिता उपाध्याय, प्रशिक्षु दिव्या चौहान एवं सहायक बेबी कंवर, विद्यालय प्रधानाचार्य आशा सोलंकी के सहयोग से जागरुकता शिविर का आयोजित हुआ। शिविर में लगभग 52 विद्यार्थी लाभान्वित हुए।

विश्वविद्यालय के गोद ग्राम दईकड़ा में चिकित्सा शिविर का आयोजन

विश्वविद्यालय की चल चिकित्सा इकाई की ओर से दिनांक 21 अप्रेल 2024 को पुलिस विश्वविद्यालय के गोद ग्राम दईकड़ा में चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में सामान्य रोग जैसे कटिशूल, सर्वांग शूल, त्वक विकार, दौर्बल्य, कास, श्वास, उदर रोग, नेत्र विकार व अम्लपित रोगों से पीड़ित 67 रोगियों को चिकित्सा परामर्श देकर निशुल्क औषधि वितरण किया गया। शिविर में द्रव्यगुण विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. निकिता पंवार, आवासीय चिकित्सा अधिकारी डॉ. कमलेश मीना ने सेवाएं दीं। इस मौके पर पुलिस विश्वविद्यालय के सहायक प्रोफेसर डॉ. मिथिलेश नारायण भट्ट ने आयोजन में सहयोग किया।

आयुर्वेद विवि में रक्तदान शिविर का हुआ आयोजन

मानव संसाधन विकास केंद्र के सौजन्य से दिनांक 19 अप्रेल 2024 को विशाल रक्तदान शिविर शिविर का आयोजन विश्वविद्यालय परिसर में किया गया। इस अवसर पर छात्र– छात्राओ में जागरुकता बढ़ाने के लिए एस.एन. मेडिकल कॉलेज, जोधपुर के आई.एच.बी.टी. विभाग की सीनियर प्रोफेसर एवं ब्लड बैंक, उम्मेद चिकित्सालय की प्रभारी प्रो. मंजू बोहरा द्वारा अंगदान और रक्तदान की आवश्यकता एवं महत्त्व विषय पर व्याख्यान दिया गया। प्रो. बोहरा ने अपने व्याख्यान में बताया कि रक्तदान करना पूर्णतः सुरक्षित हैं। उन्होंने इस संबंध में व्याप्त भ्रमों को दूर करते हुए कहा कि रक्तदान करने से शरीर के रक्त का नया निर्माण होता है, जिससे शरीर के रक्त संचार में सुधार होता है। वायरस और अन्य संक्रमक तत्वों से मुक्ति मिलती है। नियमित रक्तदान से हृदय की सेहत में सुधार होता है। उन्होंने अंगदान विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि विज्ञान द्वारा की गई तरक्की की वजह से नेत्र से लेकर हृदय तक का प्रत्यारोपण किया जा रहा हैं। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. (वैद्य) प्रदीप कुमार प्रजापति ने कहा कि रक्तदान शिविर का आयोजन बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे कई लोगों का जीवन बचाने में मदद मिलती है। इससे ब्लड बैंकों में संग्रहित रक्त की आपूर्ति में वृद्धि होती है, जिससे आपातकालीन स्थितियों में मनुष्य के प्राणों की रक्षा हो पाती है।

सी.एच.आर.डी निदेशक डॉ. राकेश शर्मा ने बताया कि रक्तदान शिविर में 74 यूनिट रक्तदान किया गया। कुलपति प्रो. प्रजापति महोदय ने स्वयं भी रक्तदान किया। उनके साथ ही आयुर्वेद, होम्योपैथी एवं योग नेचुरोपैथी के संकाय सदस्यों एवं छात्र–छात्राओं ने भी रक्तदान किया। कार्यक्रम में कुलसचिव प्रो. गोविंद सहाय शुक्ल ने रक्तदान करने वाले प्रतिभागिओं का हौंसला बढ़ाते हुए सभी छात्र–छात्राओं एवं संकाय सदस्यों को अंगदान करने के लिए प्रेरित करते हुए इस बाबत शपथ भी दिलाई।

योग व प्राकृतिक चिकित्सालय भवन में वास्तु पूजा आयोजित

कुलपति महोदय के सानिध्य में दिनांक 18 अप्रेल 2024 को योग एवं प्राकृतिक चिकित्सालय में हवन कर वास्तु पूजा की गई। योग साधना केन्द्र के प्रभारी डॉ. चन्द्रभान शर्मा ने बताया कि आयुर्वेद विश्वविद्यालय परिसर स्थित योग साधना एवं मंत्र चिकित्सा केंद्र में रामनवमी पर शुरु हुए अखंड सामूहिक रामायण पाठ की पूजन के साथ पूर्णाहुति हुई। इसी अवसर पर नवनिर्मित प्राकृतिक चिकित्सालय भवन में चिकित्सा उपक्रम शुरू करने से पूर्व यज्ञ द्वारा वास्तु पूजा की गई। कुलपति ने वास्तु पूजन कर यज्ञ किया जिसमें कुलसचिव प्रो. गोविंद सहाय शुक्ल, पीजीआईए के प्राचार्य प्रो. महेंद्र शर्मा, सीएचआरडी निदेशक डॉ. राकेश शर्मा, प्रो. गोविंद प्रसाद गुप्ता, प्रो. चंदनसिंह, परीक्षा नियंत्रक डॉ. राजाराम अग्रवाल, बीएससी नर्सिंग आयुर्वेद महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. दिनेश कुमार राय, उप कुलसचिव डॉ. मनोज अदलखा, फार्मेसी निदेशक डॉ. विजयपाल त्यागी, सहायक आचार्य डॉ. मार्कण्डेय, सतीश, डॉ. भानुप्रिया चौधरी, डॉ. प्रवीण प्रजापति, डॉ. हेमंत राजपुरोहित आदि संकाय सदस्य एवं छात्र–छात्राएं उपस्थित रहे।

ओसवाल न्याति नोहरा, बावड़ी में आयुर्वेद चिकित्सा शिविर का आयोजन

17 अप्रेल 2024 को बावड़ी पंचायत समिति स्थित ओसवाल न्याति नोहरा में आयुर्वेद चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया। शिविर प्रभारी डॉ. विष्णुदत्त शर्मा व सह प्रभारी डॉ. रश्मि शर्मा ने बताया कि शिविर में मस्सा, फिशर, फिस्टूला, विबंध जैसे अनेक रोगों का परीक्षण कर चिकित्सा परामर्श दिया गया। प्रसूति तंत्र विभाग की सह आचार्य डॉ. रश्मि शर्मा ने महिला संबंधी रोगों पर चिकित्सकीय परामर्श दिया। कायचिकित्सा विभाग की सहायक आचार्य डॉ. भानुप्रिया चौधरी ने कटिशूल, सर्वांग शूल, त्वक विकार, दौर्बल्य, प्रतिश्याय, कास, श्वास, उदर रोग, अम्लपित, विबंध आदि रोगों से पीड़ित रोगियों को चिकित्सकीय परामर्श दिए। नशामुक्ति विशेषज्ञ डॉ. प्रवीण प्रजापति ने अफीम, डोडा, स्मैक, शराब, तंबाकू आदि कई व्यसन के रोगियों को चिकित्सा परामर्श देकर अस्पताल में भर्ती होने की सलाह दी। साथ ही उन्होंने नशा न करने के प्रति जागरुक करते हुए कहा कि वर्तमान समय में बुजुर्गों के साथ युवा भी नशे की चपेट में आ रहे हैं, जिसकी वजह से पढ़ने–लिखने की उम्र में नाबालिग बच्चे संगति और अन्य कारणों की वजह से नशे के जंजाल में फंस रहे हैं। सहायक आचार्य डॉ. हेमंत राजपुरोहित ने दिनचर्या व गर्मी के मौसम में लिए जाने वाले आहार विहार, योग, रोगों के उपचार हेतु में आहार के महत्व संबंधित परामर्श दिया।

बालोतरा में नवीन स्वर्णप्राशन यूनिट का शुभारंभ

विश्वविद्यालय के कौमारभृत्य विभाग के अंतर्गत चल रहे स्वर्णप्राशन कार्यक्रम के अंतर्गत विभाग द्वारा आरोग्य भारती, बालोतरा के संयुक्त तत्वावधान में लघु उद्योग मंडल, खेड़ रोड, बालोतरा में नवीन स्वर्णप्राशन यूनिट का शुभारंभ दिनांक 16 अप्रेल 2024 को प्रातः मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. प्रदीप कुमार प्रजापति एवं कुलसचिव प्रो. गोविंद सहाय शुक्ल द्वारा किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता जी.आर. भील अध्यक्ष, आरोग्य भारती, बालोतरा ने की। इस अवसर पर कुलसचिव प्रो. गोविंद सहाय शुक्ल ने बताया कि स्वर्णप्राशन कार्यक्रम का शुभारंभ आयुर्वेद विश्वविद्यालय में वर्ष 2016 से प्रारंभ हुआ और आज तक आयुर्वेद विश्वविद्यालय द्वारा लगभग 1 लाख से अधिक बच्चों को स्वर्णप्राशन पिलाया जा चुका है। स्नातकोत्तर बालरोग विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. हरीश कुमार सिंघल के निर्देशन में स्वर्णप्राशन कार्यक्रम निरन्तर आयोजित हो रहा है। डॉ. सिंघल ने बताया कि आमजनता में बच्चों के सर्वांगीण स्वास्थ्य में स्वर्णप्राशन के लाभ और महत्त्व के प्रति जागरुकता व बढ़ाने के लिये प्रतिमाह जोधपुर शहर के 12 केन्द्रों पर स्वर्णप्राशन ड्रॉप्स पिलायी गयी।

विश्वविद्यालय के संविधान पार्क में फव्वारों का उद्घाटन

कुलपति प्रोफेसर (वैद्य) प्रदीप कुमार प्रजापति की उपस्थिति में दिनांक 15 अप्रेल 2024 को विश्वविद्यालय परिसर में संविधान पार्क का सौंदर्यीकरण करने के लिए फव्वारे लगाए गए। कुलपति ने अपने संबोधन में कहा कि विश्वविद्यालय परिसर में पानी के फव्वारे एक शांतिपूर्ण और प्राकृतिक वातावरण उत्पन्न करते हैं और इन फव्वारों की सौम्य ध्वनि और जल प्रवाह द्वारा संविधान पार्क का सौंदर्यकरण तो होगा ही, साथ ही यह स्ट्रेस मैनेजमेंट और मन को शांति भी प्रदान

करेगा। इस अवसर पर प्राचार्य प्रो. महेंद्र कुमार शर्मा, चिकित्सालय अधीक्षक प्रो. प्रमोद कुमार मिश्रा, परीक्षा नियंत्रक डॉ. राजाराम अग्रवाल, चिकित्सालय उपाधीक्षक डॉ. ब्रह्मानंद शर्मा, डीन रिसर्च डॉ. देवेंद्र चाहर, फार्मेसी निदेशक डॉ. विजयपाल त्यागी, सीएचआरडी एवं केन्द्रीय पुस्तकालय के निदेशक डॉ. राकेश कुमार शर्मा, द्रव्यगुण विभाग के विभागाध्यक्ष एवं चीफ वार्डन प्रो. चंदन सिंह, क्रिया शारीर विभाग के विभागाध्यक्ष एवं मीडिया प्रभारी डॉ. दिनेश शर्मा, अगद तन्त्र विभागाध्यक्ष डॉ. रितु कपूर, उप कुलसचिव डॉ. मनोज कुमार अदलक्खा, डॉ. मनीषा गोयल, नेचुरोपैथी महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. चन्द्रभान शर्मा, डॉ. राजीव सोनी, डॉ. प्रवीण प्रजापति स्नातकोत्तर एवं स्नातक छात्र–छात्राएं उपस्थित रहे।

त्रिदिवसीय प्राकृतिक चिकित्सा शिविर का आयोजन

कुलपति प्रोफेसर (वैद्य) प्रदीप कुमार प्रजापति के मुख्य आतिथ्य में स्वर्गीय चंचलमल चौरडिया की स्मृति में श्री कन्हैयालाल गौशाला पालरोड में त्रिदिवसीय प्राकृतिक चिकित्सा आरोग्य शिविर का आयोजन दिनांक 15 अप्रेल 2024 से हुआ। इस चिकित्सा शिविर में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा संबंधी जानकारी एवं प्राकृतिक चिकित्सा की विभिन्न थेरेपी एवं योगाभ्यास के लिए यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ नेचुरोपैथी एंड योगिक साइंस के चिकित्सक दल ने सेवाएं दीं। समापन समारोह को सम्बोधित करते हुए कुलपति प्रो. वैद्य प्रदीप कुमार प्रजापति ने कहा कि कन्हैयालाल गौशाला की ओर से आयोजित इस प्राकृतिक चिकित्सा शिविर मे जोधपुर वासियों ने प्राकृतिक चिकित्सा के महत्व को समझा एवं चिकित्सा लाभ लिया। प्राकृतिक चिकित्सा प्रकृति पर आधारित चिकित्सा है, जिसका लक्ष्य प्रकृति में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध तत्त्वों के उचित प्रयोग द्वारा रोग का मूल कारण समाप्त करना है। शिविर के समापन के अवसर पर कुलपति प्रो. प्रजापति द्वारा पक्षी चिकित्सालय, गौ चिकित्सालय का निरीक्षण किया गया।

समापन समारोह की अध्यक्षता कर रहे राजकुमार सिंह भंडारी ने कहा कि गौशाला की ओर से इस प्रकार के आयोजन नियमित अंतराल पर आयुर्वेद विश्वविद्यालय के सहयोग से जोधपुरवासियों के लिए आगामी दिवसों में किए जाएंगे। उन्होंने सहयोग के लिए कुलपति प्रो. प्रजापति का आभार जताया। यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ नेचुरोपैथी एंड यौगिक साइंस के प्राचार्य डॉ. चंद्रभान शर्मा ने बताया कि "आओ चलें प्रकृति की ओर" विषयक इस आरोग्य प्राकृतिक शिविर में महाविद्यालय के एसोसिएट प्रो. डॉ राकेश गुप्ता, असिस्टेंट प्रोफेसर सतीश ठाकुर एवं नर्सिंग कर्मी अवकाश चौधरी तथा अन्य संस्थानों के थेरेपिस्ट हनी सिंह, राकेश भाटी, स्वयंसेवक पायल चोपड़ा एवं विवेक ने भी सेवाएं दी।

बैसाखी के अवसर पर गुरूद्वारा में आयोजित चिकित्सा शिविर में 90 रोगी लाभान्वित

विश्वविद्यालय द्वारा जोधपुर शहर के सिंधी कॉलोनी स्थित गुरुद्वारा श्री तेग बहादुर साहिब में दिनांक 13 अप्रेल 2024 को विशिष्ट आयुर्वेद चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। बैसाखी के पावन पर्व पर गुरुद्वारा आए श्रद्धालुओं को विश्वविद्यालय के चिकित्सा विशेषज्ञों द्वारा आयुर्वेद चिकित्सा लाभ के साथ साथ दिनचर्या व गर्मी के मौसम में लिए जाने वाले आहार विहार, योग, रोगों के उपचार हेतु आयुर्वेद विश्वविद्यालय में उपलब्ध सुविधाओं के बारे में जानकारी दी गई तथा विभिन्न रोगों के प्रति जन सामान्य के सूचना एवं संप्रेषण के लिए गुरुद्वारे में पोस्टर भी प्रदर्शित किए गए। शिविर में विश्वविद्यालय व हिमालय वैलनेस कंपनी द्वारा रोगियों को निःशुल्क औषधियों का वितरण किया गया। शिविर प्रभारी शल्य तंत्र विभाग के सह प्रोफेसर डॉ. संजय श्रीवास्तव एवं सह–प्रभारी स्वस्थवृत्त विभाग के सह प्रोफेसर डॉ. सौरभ अग्रवाल ने बताया कि शिविर में प्रसूति तंत्र विभाग की डॉ. रश्मि शर्मा एवं डॉ. आशा के.पी. ने महिला संबंधी रोगों पर चिकित्सकीय परामर्श दिया तथा विश्वविद्यालय की रसायनशाला में निर्मित सुगर्भ औषधि जिसे गर्भावस्था के अलग अलग महीनों में गर्भ तथा माता के उच्च स्वास्थ्य के लिए दिया जाता है, उसका निःशुल्क सैंपल भी वितरित किए। काय चिकित्सा विभाग से डॉ. भानुप्रिया चौधरी व होम्योपैथी विशेषज्ञ डॉ. ऋषिकेश ने सामान्य रोगों जैसे कटिशूल, सर्वांगशूल, त्वक् विकार, दौर्बल्य, प्रतिश्याय, कास, श्वास, उदर रोग, अम्लपित, कब्ज आदि रोगों से पीड़ित रोगियों को चिकित्सकीय परामर्श दिए।

विश्वविद्यालय में बादाम रोड का विकास

कुलपति प्रो. (वैद्य) प्रदीप कुमार प्रजापति सहित संकाय सदस्यों ने दिनांक 10 अप्रेल 2024 को विश्वविद्यालय परिसर स्थित गार्गी एवं जाह्नवी छात्रा छात्रावास तक जाने वाली रोड के दोनों तरफ करीब 30 बादाम के पौधे लगाए। कुलपति ने कहा कि इस रोड को बादाम रोड के नाम से जाना जाएगा। बादाम के पेड़ों को लगाने का उद्देश्य बताते हुए उन्होंने कहा कि यह वृक्ष न सिर्फ वातावरण को स्वच्छ बनाते हैं बल्कि औषधीय एवं पौष्टिक गुणों से विभिन्न रोगों के उपचार में भी

उपयोगी हैं। इस अवसर पर अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान नई दिल्ली द्रव्यगुण विभाग की एसोसिएट प्रो. डॉ. शिवानी ने भी वृक्षारोपण जैसा पुण्य कार्य किया। स्नातकोत्तर द्रव्य गुण विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. चंदन सिंह ने बताया कि कुलपति के सान्निध्य में विश्वविद्यालय परिसर में कांचनार रोड, अर्जुन रोड पूर्व में निर्मित किए गए है, उसी क्रम में बादाम के दस–दस फीट के बादाम के पौधे लगाकर बादाम रोड बनाया जा रहा है। मीडिया प्रभारी डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा ने बताया कि इस अवसर पर उपकुलसचिव डॉ. मनोज अदलखा, डॉ. राजेंद्र पूर्विया, योग साधना केंद्र के प्रभारी एवं प्राचार्य योग व नेचुरोपैथी चिकित्सालय डॉ. चन्द्रभान शर्मा सहित द्रव्यगुण विभाग के स्नातकोत्तर अध्येता एवं औषधीय उपवन के कर्मचारियों का सहयोग रहा।

छः दिवसीय आत्मरक्षा कार्यशाला का आयोजन

विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई, रेड क्रॉस सोसाइटी यूनिट एवं राजस्थान पुलिस के महिला आत्म–प्रशिक्षकों के संयुक्त तत्त्वावधान में छात्राओं को आत्म रक्षा के गुर सिखाने के लिए 1 अप्रेल से प्रारम्भ छः दिवसीय कार्यशाला का 6 अप्रैल 2024 को समापन हुआ। कार्यशाला के समापन कार्यक्रम के अवसर पर कुलपति प्रो. प्रजापति ने सभागार में उपस्थित छात्राओ को संबोधित करते हुआ कहा कि विषम परिस्थितियों में स्वयं अपनी सुरक्षा करने के लिए इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमो में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेना चाहिए तथा प्रशिक्षण लेने के पश्चात् नियमित अभ्यास करना चाहिए। इस प्रकार के कार्यक्रमों से छात्राओ में आत्मविश्वास बढ़ने के साथ साथ छेड़छाड़ जैसी घटना के समय डरने के बजाय स्वयं को शारीरिक एवं मानसिक रूप से मजबूत कर परिस्थिति का सामना करने का सामर्थ्य बढ़ता है। इस अवसर पर प्रशिक्षकों एवं प्रशिक्षित छात्राओं को प्रमाण पत्र देकर प्रोत्साहित किया गया। राजस्थान पुलिस से आये प्रशिक्षक धर्माराम एवं श्रीमती किरण ने छात्राओं को आत्मरक्षा के गुर सिखाए और उन्होंने कहा कि छात्राएं निडर होकर इसे अपने जीवन का हिस्सा बनायें। कुलसचिव प्रो. गोविंद सहाय शुक्ल ने कहा कि विवि में आयोजित ट्रेनिंग प्रोग्राम से छात्राओं को आज के युग में प्रेरणा लेकर दूसरो को भी प्रेरित करना चाहिए। समय–2 पर इस तरह के कायक्रमों के आयोजन से महिलाओं को स्वयं की सुरक्षा के प्रति जागरुक बनाने के लिये प्रयास किए जाते रहेंगे। इस अवसर पर विश्वविद्यालय में उत्कृष्ट सेवाएं देने के लिए कुलपति प्रो. प्रजापति ने पूर्व कुलसचिव एवं वर्तमान में अतिरिक्त जिला कलेक्टर, जोधपुर ग्रामीण श्रीमति सीमा कविया को सम्मानित किया। डॉ. कविया ने सभी को मतदाता जागरुकता के लिए शपथ दिलाई। प्राचार्य प्रो. महेंद्र कुमार शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। सी.एच.आर.डी के निदेशक एवं कार्यशाला के कॉर्डिनेटर डॉ. राकेश कुमार शर्मा ने 6 दिवसीय कार्यशाला के अंतर्गत हुई गतिविधियों के बारे में विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की।

मैक्सिको से आये विदेशी सैलानियों का आयुर्वेद विश्वविद्यालय भ्रमण

मैक्सिको देश से पधारे विदेशी सैलानियों को दिनांक 04 अप्रेल 2024 को आयुर्वेद विश्वविद्यालय का भ्रमण करवाया गया। सूर्यनगरी जोधपुर में पर्यटन के उद्देश्य से मैक्सिको से आये इक्कीस सैलानियों ने आयुर्वेद चिकित्सा पद्दति में गहन रुचि के चलते विश्वविद्यालय परिसर का भ्रमण किया। विश्वविद्यालय परिसर स्थित पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टिट्यूट ऑफ आयुर्वेद, होम्योपैथी महाविद्यालय एवं योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा महाविद्यालय के शैक्षणिक विभागों के बारे में उन्हें महत्वपूर्ण जानकारी दी गई।

कुलपति प्रो. प्रजापति ने बताया कि इस प्रकार के एक्सपोजर ट्रिप से आयुष पद्धति को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिलती है जिससे विदेशी पर्यटकों में आयुर्वेद चिकित्सा लेने के लिए उत्सुकता उत्पन्न होती है। सैलानियों को संबोधित करते हुए कुलपति ने आयुर्वेद चिकित्सा से सही हुए विभिन्न जटिल रोगों के प्रमाण दिए। आयुर्वेद चिकित्सा औषध केवल रोगों को ठीक ही नहीं करती अपितु यह रोगी के मानसिक व सामाजिक स्वास्थ्य पर भी सकारात्मक प्रभाव डालती है। पंचकर्म विभागाध्यक्ष डॉ. ज्ञान प्रकाश शर्मा ने पंचकर्म सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में विभिन्न रोगों में होने वाले पंचकर्म की क्रियाओं जैसे अभ्यंग, शिरोधारा, कटिबस्ती, स्वेदन आदि सुविधाओं के बारे में विस्तृत जानकारी दी तथा डॉ. अचलाराम कुमावत, डॉ. गौरीशंकर राजपुरोहित ने परिसर में निर्माणाधीन इंटरनेशनल सेण्टर फॉर पंचकर्म के बारे में बताया, साथ ही डॉ. निकिता पंवार ने हर्बल गार्डन में विभिन्न रोगों में उपयोग आने वाली जड़ी बूटियों जैसे तुलसी, अर्जुन, अश्वगंधा, नीम, ग्वारपाठा, शतावरी, निर्गुण्डी, गिलोय के गुणों के बारे में बताया। उन्होंने हर्बल गार्डन स्थित नक्षत्र वाटिका के बारे में भी सैलानियों को बताया।

नाड़ी परीक्षण विषयक राष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारम्भ

विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर क्रिया शारीर विभाग द्वारा दो दिवसीय नाड़ी परीक्षण विषयक कार्यशाला 2024 का आयोजन दिनांक 02 से 03 अप्रेल 2024 तक विश्वविद्यालय के सभागार मे हुआ। इस राष्ट्रीय कार्यशाला में देशभर से 250 से अधिक प्रतिभागी शामिल हुए। कुलपति प्रोफेसर (वैद्य) प्रदीप कुमार प्रजापति ने कार्यशाला के शुभारम्भ के अवसर पर सेमिनार हॉल में उपस्थित छात्र–छात्राओं एवं संकाय सदस्यों को संबोधित करते हुए कहा कि नाड़ी परीक्षण एकमात्र ऐसी विधा है जिसके द्वारा रोगी के दोष, धातु, मल की स्थिति का पता कर रोग की प्रकृति एवं विकृति का निदान करके सुव्यवस्थित चिकित्सा प्रबंधन किया जा सकता है, आयुर्वेदीय शास्त्रीय ग्रंथो में त्रिदोषों के आंकलन में नाड़ी परीक्षण का महत्व हैं, नाड़ी परीक्षण चिकित्सक के कौशल पर अत्यधिक निर्भर हैं।

आयुर्वेद के सन्दर्भ में नाड़ी ज्ञान का वैज्ञानिक रूप से विश्लेषण करने के लिए युगानुरूप सन्दर्भ में अनुसन्धान की आवश्यकता है। कार्यशाला के प्रथम दिन मुंबई के पूर्व प्रोफेसर डॉ. विनायक विट्ठल तायड़े ने अपने व्याख्यान में बताया कि नाड़ी परीक्षा का आयुर्वेदिक चिकित्सा में महत्वपूर्ण स्थान है। रोगों के निदान और उपचार में

इसकी अहम भूमिका है।

कार्यशाला के समापन कार्यक्रम के अवसर पर दिनांक 3.4.2024 को कुलपति प्रो. प्रदीप कुमार प्रजापति ने कहा कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए आयुर्वेद के नजरिए से ही आयुर्वेद को समझना चाहिए। लाक्षणिक चिकित्सा नहीं करके मूलभूत सिद्धांतों के अनुसार चिकित्सा क्रम का निर्धारण करना चाहिए। रोगी एवं रोग की परीक्षा के लिए आयुप्रकृति वेब पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन प्रकृति असेसमेंट स्केल द्वारा प्रकृति परीक्षण करने से रोग के मूल कारण का निर्धारण कर चिकित्सा में सफलता प्राप्त की जा सकती है। इस अवसर पर कुलसचिव प्रो. गोविंद सहाय शुक्ल ने कहा कि स्नातकोत्तर अध्येताओं के लिए अनुसंधान से संबंधित इस प्रकार की कार्यशालाएं नियमित अंतराल पर करवाई जाएंगी। प्राचार्य प्रो. महेंद्र कुमार शर्मा ने भी इस अवसार पर अपने विचार रखे। कार्यशाला में सीसीआरएएस नई दिल्ली के रिसर्च ऑफिसर डॉ. सुहास चौधरी ने अपने व्याख्यान से प्रकृति असेसमेंट स्केल एवं आयुर्प्रकृति वेब पोर्टल के डेवलपमेंट के लिए सभी संस्थाओं में एकरूपता के लिए सीसीआरएएस द्वारा किए गए नवाचारों एवं ऑनलाइन असेस्मेंट के संबंध में प्रतिभागियों को अवगत कराया। द्वितीय सेशन में सीसीआरएएस नई दिल्ली के रिसर्च ऑफिसर डॉ. किशोर गवली ने प्रकृति असेसमेंट स्केल के भौतिक, शरीर क्रियात्मक, मनोवैज्ञानिक एवं स्वभाव संबंधी लक्षणों की एसओपी के संबंध में व्याख्यान दिया। कुलपति प्रो. प्रजापति ने विषय विशेषज्ञों को प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. हेमंत राजपुरोहित, डॉ. निकिता एवं डॉ. वर्षा ने किया।

आयुर्वेद महाविद्यालय के छात्रों का शैक्षणिक भ्रमण आयोजित

दिनांक 5 मई 2024 को बीएएमएस द्वितीय वर्ष में अध्ययनरत 50 छात्र–छात्राओं का उत्तरी भारत का शैक्षणिक भ्रमण आयोजित हुआ। कुलपति प्रो. प्रजापति ने छात्र–छात्राओं को शैक्षणिक भ्रमण की बधाई देते हुए कहा कि आयुर्वेद के विद्यार्थियों के लिए शैक्षणिक भ्रमण का विशेष महत्व है। इससे छात्र–छात्राओं को विभिन्न संस्थानों में प्रशिक्षण एवं ज्ञानार्जन करने एवं हिमालय में मिलने वाली औषधियों की जानकारी प्राप्त करने का अवसर मिला। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो महेंद्र कुमार शर्मा ने बताया कि इन आठ दिनों में छात्र हर्बल गार्डन, फार्मेसी फॉरेंसिक साइंस लैब योग एवं ध्यान अनुसंधान केंद्र आदि का भ्रमण कर ज्ञानवर्धन किया। शैक्षणिक भ्रमण के समन्वयक डॉ. प्रवीण प्रजापति एवं सह–समन्वयक डॉ. पूजा शर्मा थे। यह शैक्षणिक भ्रमण जालंधर, मनाली कसौली, धर्मशाला व अमृतसर के विभिन्न क्षेत्रों में आयोजित हुआ।

प्रसवोत्तर रक्तस्राव पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन

दिनांक 6 मई 2024 को स्नातकोत्तर प्रसूति तंत्र एवं स्त्री रोग विभाग द्वारा प्रसवोत्तर रक्तस्राव विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। व्याख्यान कर्त्ता श्री बालाजी हॉस्पिटल की स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ डॉ. सीमा शर्मा ने बताया कि प्रसवोत्तर रक्तस्राव (पीपीएच) एक गंभीर स्थिति है जो विश्वभर में नवप्रसूताओं की मृत्यु का एक महत्वपूर्ण कारण है। उन्होंने बताया कि बच्चे के जन्म के दौरान और बाद में होने वाले रक्तस्राव के कारण प्रसूताओं की मृत्यु का खतरा बढ़ जाता है। आमतौर पर रक्तस्राव बच्चे के जन्म के 24 घंटों के भीतर होता है, लेकिन यह प्रसव के 12 सप्ताह बाद तक भी हो सकता है। इसके साथ ही उन्हेंनि प्रसावोत्तर होने वाले रक्तस्राव (पोस्टपार्टम हैमरेज) के कारण बचाव एवं आत्ययिक चिकित्सा के बारे में विस्तृत जानकारी दी। प्रसूति तंत्र एवं स्त्री रोग विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. ए. नीलिमा ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए बताया कि पीपीएच की सही जानकारी से महिलाओं को ये अवस्था आने से और उससे होने वाले नुकसान से बचाया जा सकता है। इस अतिथि व्याख्यान का समन्वयन प्रसूति तंत्र एवं स्त्री रोग विभाग की एसोसिएट प्रो. डॉ. रश्मि शर्मा द्वारा किया गया। कार्यक्रम संचालन स्नातकोत्तर अध्येता डॉ. प्रज्ञा आर्य ने किया।

विश्व अस्थमा दिवस कार्यक्रम का आयोजन

दिनांक 7 मई 2024 को पंचकर्म विभाग ने विश्व अस्थमा दिवस मनाया। पंचकर्म विभागाध्यक्ष डॉ. ज्ञान प्रकाश शर्मा ने कहा कि भारत में अस्थमा से होने वाली मृत्यु दर में हर साल वृद्धि हो रही है। अस्थमा कई कारणों से हो सकता है, अधिकांश मामलों में, एलर्जी के परिणामस्वरूप अस्थमा विकसित होता है। अस्थमा धूल, धुआं, धूम्रपान, आनुवंशिक प्रभाव आदि के कारण होता है। डॉ. शर्मा ने कहा कि धूम्रपान अस्थमा के लक्षणों को बढ़ा सकता है, अतः धूल, धुआं और धुएं के कचरे से बचना चाहिए। ठंडी हवा से सावधान रहना चाहिए। खासकर सर्दियों में श्वसन संबंधी समस्याएं बढ़ने की संभावना रहती

है। उन्होंने कहा कि यह दिन अस्थमा, इसके निदान और उपचार के बारे में जागरुकता बढ़ाने के लिए समर्पित है। डॉ. दिलीप कुमार व्यास ने बताया कि अस्थमा के लिए सावधानी के तौर पर हल्दी और दूध का सेवन करना चाहिए। हल्दी में एंटीमाइक्रोबियल गुण होते हैं जो सांस की समस्याओं को कम करने में मदद कर सकते हैं। अदरक में एंटीऑक्सीडेंट गुण होते हैं जो श्वसन संक्रमण को रोक सकते हैं, शहद में एंटीऑक्सीडेंट और एंटी–इंफ्लेमेटरी गुण होते हैं जो श्वसन समस्याओं को नियंत्रित कर सकते हैं। तुलसी के पत्तों का रस पीने से श्वसन संक्रमण को रोकने और श्वसन समस्याओं को नियंत्रित करने में मदद मिल सकती है। डॉ. अचलाराम कुमावत और डॉ. गौरीशंकर राजपुरोहित ने बताया कि आयुर्वेद में प्राणायाम को अस्थमा के उपचार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है।

विश्व अस्थमा दिवस पर हाईवे पर वृक्षारोपण सम्पन्न

दिनांक 7 मई 2024 को कुलपति प्रो. (वैद्य) प्रदीप कुमार प्रजापति ने पर्यावरण संरक्षण हेतु विश्वविद्यालय के गेट नम्बर 01 से 02 के बीच में नेशनल हाईवे संख्या 62 के डिवाईडर पर नीम के 08 से 10 फीट के कुल 15 पौधों का रोपण किया। उन्होंने कहा कि यह वृक्षारोपण का कार्य अमावस्या एवं विश्व अस्थमा दिवस के अवसर पर किया गया है जो मनुष्य, पशु–पक्षियों आदि के जीवन के लिए महत्वपूर्ण रहेगा। वृक्ष हमें जीवनदायिनी, प्राणवायु (ऑक्सीजन) प्रदान करते हैं। हम पानी एवं भोजन के बगैर कुछ दिनों तक के लिये जीवित रह सकते हैं, परन्तु बिना प्राणवायु के कुछ पल में ही मृत्यु निश्चित है जिसका प्रभाव हम कोरोनाकाल में देख चुके हैं। सभी को विश्व के पर्यावरण संरक्षण के लिये एक पौधा अवश्य लगाना चाहिए। इस अवसर पर कुलपति प्रो. प्रजापति के साथ द्रव्यगुण विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. चन्दन सिंह डीन रिसर्च, डॉ. देवेन्द्र सिंह चाहर, उप कुलसचिव डॉ. मनोज अदलक्खा, योग एवं नेचुरोपैथी महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. चन्द्रभान शर्मा मीडिया प्रभारी एवं क्रियाशारीर विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. दिनेशचन्द्र शर्मा, हर्बल गार्डन प्रभारी डॉ. राजेन्द्र पूर्विया, डॉ. निकिता पंवार एवं डॉ. प्रेमकुमार ने पौधारोपण किया।

विश्व डिम्बग्रंथि कैंसर दिवस 2024 जागरुकता दिवस रिपोर्ट

08 मई 2024 को यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ होम्योपैथी, जोधपुर में विश्व डिम्बग्रंथि कैंसर जागरुकता दिवस का आयोजन डॉ. मनाली त्यागी एवं डॉ. आभा अग्रवाल के द्वारा किया गया। इसके अन्तर्गत बी. एच.एम.एस. तृतीय वर्ष के छात्र–छात्राओं को डिम्बग्रंथि के कैंसर से संबंधित सभी नवीनतम तथ्यों से अवगत कराया गया। कार्यक्रम में डॉ. आभा अग्रवाल ने डिम्बग्रंथि कैंसर का परिचय, प्रकार, निदान और सामान्य उपचार के बारे में बताया। डॉ. मनाली त्यागी द्वारा फास्फोरस क्रोकस सैटिवस, कार्बोलिक एसिड, आर्सेनिक और उसके लक्षण आयोडियम और उसके लवणों से तैयार कुछ होम्योपैथिक दवाओं का उल्लेख करते हुए डिम्बग्रंथि के कैंसर में होम्योपैथी की भूमिका के बारे में बताया।

योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा शिविर का आयोजन

दिनांक 8 मई 2024 को पाली स्थित श्री कृष्ण विद्या मंदिर स्कूल में स्वर्गीय श्रेयांश त्रिवेदी की तृतीय पुण्यतिथि में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ नेचुरोपैथी एंड योगिक साइंस के प्राचार्य डॉ चंद्रभान शर्मा ने बताया कि उक्त शिविर में एसोसिएट प्रोफेसर डॉ राकेश गुप्ता, असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ सतीश ठाकुर, नर्सिंग कर्मी दौलत, स्नातक अध्येता नितेश कड़वा व हर्षिता शर्मा ने अपनी सेवाएं दी। उक्त शिविर में रोगानुसार मिट्टी पट्टी एक्यूप्रेशर, एक्युपंचर, कपिंग, योगा थेरेपी, वाइब्रेशन इत्यादि विधाओं द्वारा इलाज किया गया। शिविर प्रभारी डॉ राकेश गुप्ता ने बताया कि शिविर में फ्रोजन शोल्डर, बैक पेन, सर्वाइकल, सायटिका, घुटना दर्द, बॉडी बैलेंसिंग और विभिन्न प्रकार के शरीर में दर्द वाले 80 रोगियों को लाभान्वित किया गया।

गौ संरक्षण व गौ उत्पादों की सार्थकता पर व्याख्यान सम्पन्न

दिनांक 8 मई 2024 को विश्वविद्यालय के सभागार में समाज सेवी श्री शंकरलाल द्वारा गौ संरक्षण एवं गौ उत्पादों की सार्थकता विषय पर विशेष व्याख्यान दिया गया। श्री शंकर लाल अखिल भारतीय गौ सेवा परिषद् के संयोजक रहे हैं और वर्तमान में गौ सेवा गतिविधियों के प्रशिक्षण प्रमुख हैं। उन्होंने अपने व्याख्यान में कहा कि विलुप्त हो रही देसी गाय की नस्ल सुधार और गाय के गोबर तथा गोमूत्र से भूमि का सुधार आवश्यक है। देश की अनेक समस्याओं के समाधान पर अनुसंधान का कार्य, भूमिगत जल संरक्षण के द्वारा भूमिगत जल स्तर को बढ़ाना, वृक्षारोपण कर सघन वनों का विकास करना, गोचर भूमि पर निःशुल्क चारागाह का मॉडल स्थापित करना, गोबर एवं गोमूत्र पर अनुसंधान करना, अहिंसात्मक स्वावलंबी चिकित्सा पद्धतियों पर कार्य करना आदि अनेक गतिविधियों का संचालन किया जाना आज की

महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है।
इस अवसर पर कुलपति प्रो. प्रजापति ने कहा कि आयुर्वेद की औषधियों के निर्माण में गौ उत्पादों का महत्वपूर्ण योगदान है। देशी गाय के उत्पादों से उच्च कोटि की गुणवत्तापूर्ण औषधियों का निर्माण किया जा सकता है। इसलिए देशी गाय के पालन की अत्यधिक आवश्यकता है। प्रत्येक परिवार को जहां तक संभव हो खुद के स्वास्थ्य संरक्षण के लिए एक देसी गाय का पालन अवश्य करना चाहिए। इस अवसर पर समाजसेवी श्री श्यामसुंदर राठी, श्री राकेश निहाल, श्री निर्मल मोहन उपस्थित रहे। कुलसचिव प्रो. गोविंद सहाय शुक्ल ने सभी का स्वागत अभिनंदन किया। कार्यक्रम का संचालन क्रियाशारीर विभाग के विभागाध्यक्ष एवं मीडिया प्रभारी डॉ. दिनेश शर्मा ने किया।

एंकायलॉइजिंग स्पॉन्डिलाइटिस पर व्याख्यान का आयोजन

दिनांक 9 मई 2024 को स्नातकोत्तर पंचकर्म विभाग में एंकायलॉइजिंग स्पॉन्डिलाइटिस पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। विभागाध्यक्ष डॉ. ज्ञान प्रकाश शर्मा ने बताया कि यह एक दीर्घकालिक ऑटो इम्यून बीमारी है जो मुख्य रूप से रीढ़ की हड्डी या सैक्रो–इलियक जोड़ों को प्रभावित करती है। इस रोग की अग्रिम अवस्था में संपूर्ण कशेरुकाएँ आपस में जुड़ जाती हैं और बैम्बू स्पाइन का निर्माण करती हैं। इस बीमारी के लक्षण सबसे पहले 18–40 वर्ष की उम्र में दिखाई देते हैं। निचली रीढ़ की हड्डी या कभी–कभी पूरी रीढ़ में लंबे समय तक दर्द और जकड़न, जो अक्सर एक या दोनों नितंब या सैक्रोइलियक जोड़ में महसूस होता है। इस रोग से महिलाओं की तुलना में पुरुष अधिक प्रभावित होते हैं। पंचकर्म के सहायक आचार्य डॉ. दिलीप कुमार व्यास ने बताया कि एंकायलॉइजिंग स्पॉन्डिलाइटिस में योगासन और प्राणायाम भी लाभकारी माने जाते हैं और विभिन्न पंचकर्म क्रियाएं जैसे विरेचन कर्म, वस्ति कर्म, नस्यकर्म आदि भी बहुत उपयोगी हैं।

आर्मी कैंट की महिलाओं ने एडीएचडी व आटिज्म की पहचान के सीखे तरीके

दिनांक 9 मई 2024 को स्नातकोत्तर बालरोग विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. हरीश कुमार सिंघल द्वारा 59 मीडियम रेजीमेंट आर्मी कैंट शिकारगढ़ जोधपुर की महिलाओं के लिये ''घर एवं स्कूल में ए.डी.एच.डी. और आटिज्म से पीड़ित बच्चों की स्क्रीनिंग किस प्रकार करें'' विषय पर व्याख्यान दिया गया। डॉ. हरीश कुमार सिंघल ने बताया कि अटेंशन डेफिसिट हाइपर एक्टिविटी डिसआर्डर (एडीएचडी) बच्चों के व्यवहार संबंधी विकारों में से एक है जिसमें हाइपर एक्टिविटी के साथ–साथ भूलने की बीमारी, खराब आवेग नियंत्रण या आवेग और ध्यान भंग होना आदि लक्षण मिलते हैं। यह रोग 5–8 प्रतिशत बच्चों को प्रभावित करता है जिसमें ज्यादातर लड़के प्रभावित होते हैं। यह विकार अक्सर बच्चों से वयस्कता तक रहता है और उनकी शिक्षा और दैनिक जीवन से सम्बन्धित कामकाज को प्रभावित करता है। आयुर्वेद में इसको उन्माद की श्रेणी में रखा गया है जिसमें मुख्यतः वात दोष की पुष्टि होती है। यदि इस बीमारी की पहचान प्रारंभ में ही कर ली जाये तो आयुर्वेद चिकित्सा से उचित लाभ दिया जा सकता है। इसी प्रकार डॉ. हरीश सिंघल ने ऑटिज्म के विषय में जानकारी देते हुये कहा कि ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसार्डर एक विकास संबंधी विकार हैं। इससे पीड़ित बच्चों को बातचीत करने में, पढ़ने–लिखने में और समाज में मेलजोल बनाने में परेशानियां आती हैं। हाल ही के वर्षों में इस प्रकार के रोग के मामलों की संख्या लगातार बढ़ रही हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार यह अनुमान लगाया गया है कि दुनिया भर में लगभग 100 बच्चों में से 1 को ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसार्डर है। ऑटिज्म से प्रभावित बच्चे वाले परिवारों में ऑटिज्म और इसी तरह की अन्य मनोवैज्ञानिक स्थिति की पुनरावृत्ति की उच्च दर ज्यादा देखने को मिलती है। ऑटिज्म ऐसे बच्चो में अधिक देखने को मिलता है जिनमें कुछ आनुवांशिक और गुणसूत्रीय संबंधी विकार होते हैं। जैसे –डाउन सिंड्रोम, फ्रैजाईल एक्स सिंड्रोम, ट्यूबरस स्केलेरोसिस वाले बच्चों में ऑटिस्टिक विशेषताएं देखी जाती हैं। आयुर्वेद विश्वविद्यालय में ए.डी.एच.डी एवं ऑटिज्म से प्रभावित बच्चों की संख्या को ध्यान में रखते हुये एक ऑटिज्म स्पेशियलिटी यूनिट विकसित की गयी है जिसमें ऐसे बच्चों का समुचित चिकित्सा प्रबंधन आयुर्वेद एवं योग के माध्यम से किया जाता है।

क्षारसूत्र थेरेपी कोर्स के प्रमाण पत्र वितरित

दिनांक 11 मई 2024 को स्नातकोत्तर शल्य तंत्र विभाग द्वारा संचालित सेमी ऑनलाइन पोस्ट ग्रेजुएट सर्टिफिकेट कोर्स इन क्षार सूत्र थैरेपी के सत्र 2024 के प्रथम बैच के देश के विभिन्न प्रांतो से आए नौ अभ्यर्थियो को कुलसचिव प्रो. गोविन्द सहाय शुक्ला, पीजीआईए जोधपुर के प्राचार्य प्रो. महेंद्र कुमार शर्मा और शल्य तंत्र के विभागाध्यक्ष प्रो. राजेश कुमार गुप्ता द्वारा प्रमाण पत्र वितरित किए गए। इन अभ्यर्थियो की 24 दिन ऑनलाइन कक्षाए समाप्त होने के पश्चात छह दिन विश्वविद्यालय के संजीवनी चिकिसालय में ऑफलाइन प्रेक्टिकल ट्रेनिंग दी गई। इस अवसर पर असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. एकता अरोड़ा विभागीय स्नातकोत्तर अध्येता एवं प्रशिक्षणार्थी उपस्थित रहे।

संजीवनी होम्योपैथी चिकित्सालय में अंतरराष्ट्रीय नर्सेज दिवस मनाया

दिनांक 12 मई 2024 को अंतरराष्ट्रीय नर्स दिवस का आयोजन किया गया। इस दौरान सराहनीय कार्यों के लिए नर्सिंग कर्मचारी अनुराधा त्रिपाठी गोविन्द, नूर इस्लाम एवं सुमन गहलोत को चिकित्सालय अधीक्षक डॉ. वृषाली बराब्दे व डा मनाली त्यागी ने सम्मानित किया। कार्यक्रम में संकाय सदस्य डॉ. आभा, डॉ. यशस्वी, डॉ. प्रदीप, डॉ. अंकिता, डॉ. राकेश, डॉ. धर्मेन्द्र एवं डॉ. मोहन उपस्थित रहे।

संजीवनी चिकित्सालय में महिला का सामान्य प्रसव संपन्न

दिनांक 12 मई 2024 को संजीवनी आयुर्वेद चिकित्सालय के स्नातकोत्तर प्रसूति तंत्र एवं स्त्री रोग विभाग द्वारा आयुर्वेदीय गर्भिणी परिचर्या का पालन करवाने के बाद मदर्स–डे पर सफलतापूर्वक सामान्य प्रसव करवाया गया। विभागाध्यक्ष प्रो. ए. नीलिमा ने बताया कि गर्भिणी को विश्वविद्यालय की फार्मेसी में निर्मित सुगर्भा किट से मासानुमासिक परिचर्या करवायी गयी। सुगर्भा किट माता एवं गर्भस्थ शिशु के शारीरिक एवं मानसिक वृद्धि और विकास के लिए उपयुक्त महत्त्वपूर्ण आयुर्वेदीय औषधियों से निर्मित हैं। प्रसव करवाने में प्रसूति तंत्र एवं स्त्री रोग विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. ए. नीलिमा, डॉ. रश्मि शर्मा, डॉ. आशा केपी, डॉ. हेमंत कुमार, कौमारभृत्य विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. हरीश सिंघल, डॉ. अशोक यादव, संजीवनी आयुर्वेद चिकित्सालय के आर.एम.ओ डॉ. शहादत खान, डॉ. निवेदिता मिश्रा, डॉ. सुमन एवं स्नातकोत्तर अध्येता डॉ. सनूर बानो, डॉ. संजय मीणा डॉ. जिज्ञासा, डॉ. हिमांशु, नर्सिंग स्टाफ कल्पना व सरला का सहयोग रहा।

डाइंग मैटर्स जागरुकता सप्ताह पर कार्यशाला आयोजित

दिनांक 13 मई 2024 को यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ होम्योपैथी जोधपुर के प्राचार्य डॉ. गौरव नागर के निर्देशानुसार होम्योपैथी विशेषज्ञ शिक्षक–चिकित्सकों की टीम द्वारा अनुबन्ध वृद्धजन कुटीर मण्डोर में डाइंग मैटर्स जागरुकता सप्ताह के अवसर पर जागरुकता कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें डॉ. आभा अग्रवाल, डॉ. मनाली त्यागी एवं डॉ. राकेश कुमार मीना ने बताया कि मरना उतना ही स्वाभाविक है जितना जन्म लेना। डॉ. मनाली ने कुछ टास्क एवं सवालों से मृत्यु के विषय पर उनकी सोच जानने की कोशिश की और उन्हें अपनी इच्छाएं व्यक्त करने का मौका दिया। डॉ. आभा ने एक कहानी एवं डॉ. राकेश ने एक भाषण के माध्यम से मृत्यु का विश्लेषण करते हुए भयभीत होने के लिए नहीं बल्कि इस बहुमूल्य जीवन की सराहना करने के लिए प्रेरित किया।

विश्वविद्यालय में एक मासीय विशिष्ट प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

दिनांक 13 मई 2024 को विश्वविद्यालय के मानव संसाधन विकास केंद्र की ओर से एक मासीय वर्तमान परिदृश्य में चिकित्सा पद्धतियों की संभावनाएं एवं चुनौतियां विषयक चिकित्सकीय विशिष्ट व्याख्यानमाला का शुभारंभ कुलपति प्रो. (वैद्य) प्रदीप कुमार प्रजापति के सान्निध्य में हुआ। इस अवसार पर कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालय की ओर से की गई यह एक नई पहल है जिसमें स्नातकोत्तर छात्र–छात्राओं को सभी चिकित्सा विधाओं के बारे में सीखने का अवसर मिलेगा। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में चिकित्सा के क्षेत्र में कई अवसर होने के साथ–2 बहुत सारी चुनौतियां भी हैं। वर्तमान समय में तकनीकी उन्नति से डिजिटल स्वास्थ्य सेवाएं और अनुसंधान के माध्यम से नई उपचार पद्धतियों का विकास हो रहा है। इसके साथ ही नए–नए रोगों के उत्पन्न होने एवं उनके लिए नए चिकित्सा प्रोटोकॉल बनाना एवं वैक्सीन आदि का निर्माण करना अपने आप में एक चुनौती है। इस लेक्चर सीरीज का उद्देश्य छात्र – छात्राओं का व्यापक तौर पर सैद्धांतिक ज्ञान के साथ प्रायोगिक ज्ञानवर्धन करना है। मानव संसाधन विकास केंद्र के निदेशक डॉ. राकेश कुमार शर्मा ने बताया कि यह सीरीज एक महीने तक चलेगी जिसमें विश्वविद्यालय के परिसर एवं टोंक व केकड़ी स्थित आयुर्वेद, होम्योपैथी, योग एवं नैचुरोपैथी महाविद्यालयों के संकाय सदस्य एवं स्नातकोत्तर छात्र–छात्राएं भाग लेंगे। इसके अंतर्गत प्रतिदिन एक विशिष्ट विषय पर देश–विदेश के अनुभवी विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान दिया जायेगा। व्याख्यान श्रृंखला के पहले दिन पहले सत्र में अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान, नई दिल्ली के अनुसंधान सलाहकार डॉ. अनिल कुमार द्वारा नैदानिक महत्त्व बनाम सांख्यिकीय महत्त्व विषय पर व्याख्यान दिया गया। व्याख्यान श्रृंखला के दूसरे सत्र में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान के स्वास्थ्यवृत्त विभाग के सहायक आचार्य डॉ. पुनीत चतुर्वेदी ने समग्र स्वास्थ्य एवं आरोग्य एवं योग का चिकित्सकीय महत्त्व विषय पर व्याख्यान दिया। व्याख्यान में सभी शिक्षण संकाय व 250 स्नातकोत्तर अध्येता मौजूद थे।

विश्वविद्यालय में बच्चों में जन्मजात हृदय रोग और उससे संबंधित सीपीआर विषय पर व्याख्यान का आयोजन

मानव संसाधन विकास केंद्र द्वारा आयोजित एक मासीय व्याख्यानमाला के दूसरे दिन 14.05.2024 के प्रथम सत्र में रेडियंट हॉस्पिटल जोधपुर के अनुभवी शिशु रोग विशेषज्ञ पीडियाट्रिक

कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. हिमांशु त्यागी ने बच्चों में जन्मजात हृदय रोग और उससे संबंधित सीपीआर दिशा–निर्देशों से संबधित विषय पर अपना व्याख्यान दिया। डॉ. त्यागी ने बताया कि बच्चों में जन्मजात कंजेनाइटल हार्ट डिजीज एक हृदय रोग है जिसमें हृदय की संरचना या कार्य में जन्म से ही विकृतियां होती हैं। यह विकृतियां हृदय की दीवारों, वाल्वों या रक्त वाहिकाओं में हो सकती हैं। इस रोग के कारण बच्चों में हदय और श्वसन संबंधी जटिलताएं हो सकती हैं जिनसे निपटने के लिए उचित चिकित्सा देखभाल और आपातकालीन प्रक्रियाएं आवश्यक होती हैं। साथ ही उन्होंने हृदय रोगों एवं आत्यायिक समय में सीपीआर के महत्त्व पर प्रकाश डाला। दूसरे सत्र में मदन मोहन मालवीय आयुर्वेद महाविद्यालय, उदयपुर के सहायक आचार्य एवं स्त्री प्रसूतिरोग विशेषज्ञ डॉ. अनु एमएस ने पॉलिसिस्टिक ओवरियन डिजीज के आयुर्वेदिक दृष्टिकोण एवं उपचार विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया पॉलिसिस्टिक ओवेरियन सिंड्रोम पीसीओएस महिलाओं में एक सामान्य हार्मोनल विकार है जो अंडाशय ओवरी में सिस्ट के बनने, अनियमित मासिक चक्र और हार्मोनल असंतुलन का कारण बनता है। आयुर्वेद में इसे आर्तवदोष और ग्रंथि दुष्टि के रूप में देखा जाता है। यह वात, पित्त और कफ दोषों के असंतुलन के कारण होता है। जिसका नियमित आहार विहार और औषधियों का उपयोग करके जीवनशैली में बदलाव कर और मानसिक तनाव को कम करके प्रबंधन किया जा सकता है।

गुड मैन्युफैक्चरिंग प्रैक्टिस व मोतियाबिंद पर लेक्चर सम्पन्न

मानव संसाधन विकास केंद्र द्वारा आयोजित एक मासीय व्याख्यानमाला के तीसरे दिन 15.05.2024 को प्रथम सत्र में डॉ. रामपाल सोमानी (सेवानिवृत्त औषधि निरीक्षक राजस्थान सरकार) ने गुड मैन्युफैक्चरिंग प्रैक्टिस एवं ड्रग कॉस्मेटिक एक्ट पर व्याख्यान दिया। डॉ. सोमानी ने बताया कि जीएमपी किसी भी प्रोडक्ट की मैन्युफैक्चरिंग से सम्बन्धित अंतरराष्ट्रीय मानक है जिसमें किसी भी प्रोडक्ट का निर्माता प्रोडक्ट के निर्माण में यह सुनिश्चित करता है कि निर्मित की जा रही औषधि की कवालिटी बेहतरीन है और इसे बनाने में सभी तरह के नियमों का पालन किया गया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने जीएमपी के लिये विस्तृत दिशा–निर्देश सुनिश्चित किये हैं। कई देशों ने WHO-GMP के आधार पर अपने जीएमपी नियम तैयार किये हैं। 1940 में ड्रग्स एंड कॉस्मेटिक एक्ट अस्तित्व में आया था। उसके बाद 1945 में इसके नियम बने। इसके सेक्शन 3 ए और 3 एच के अंतर्गत आयुष से जुड़ी औषधियों के दिशानिर्देश वर्णित है। दूसरे सत्र में डॉ. कामदार आई हॉस्पिटल जोधपुर की कंसल्टेंट डॉ. शांति प्रिया, ने मोतियाबिंद रोग के दृष्टिकोण एवं उपचार विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया अक्सर बढ़ती उम्र के साथ आंख के लेंस के ऊपर का टिश्यू चोट लगने के कारण बदला जाये तो भी मोतियाबिंद जल्दी हो सकता है। मोतियाबिंद कई लोगो को उनकी पारिवारिक हिस्ट्री की वजह से भी होता है। जैसे परिवार में माता पिता को डायबिटीज है तो सन्तान को भी मोतियाबिंद होने की संभावना बढ़ जाती है। मोतियाबिंद होने पर आम तौर पर नजर धुंधली पड़ जाती है। हलकी रौशनी में देखने में परेशानी होती है। मोतियाबिंद के मरीजो में अक्सर देखा जाता है कि वे मोतियाबिंद के पकने का इंतजार करते हैं। अगर मोतियाबिंद ज्यादा पक जाता है तो काला मोतियाबिंद होने का खतरा बढ़ जाता है। इससे आपकी रौशनी हमेशा के लिए जा सकती है इसीलिए समय रहते ऑपरेशन करा लेना चाहिए। जिनसे निपटने के लिए उचित चिकित्सा देखभाल और आपातकालीन प्रक्रियाएं आवश्यक होती हैं।

अन्तरराष्ट्रीय वक्ताओं के चिकित्सकीय व्याख्यान आयोजित

मानव संसाधन विकास केंद्र (सीएचआरडी) की ओर से आयोजित हो रही एकमासीय व्याख्यानमाला के चौथे दिन 16.05.2024 के प्रथम सत्र में बॉस्टन आयुर्वेद स्कूल की वरिष्ठ एवं अनुभवी आयुर्वेद चिकित्सक डॉ. प्रतिभा शाह ने आयुर्वेद अनुसंधान के लिए एक व्यापक समकालीन स्वास्थ्य देखभाल मॉडल के रूप में आयुर्वेद की भूमिका विषय पर अपना व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि आयुर्वेद जो भारत की प्राचीन चिकित्सा प्रणाली है, आज के समय में एक व्यापक समकालीन स्वास्थ्य देखभाल मॉडल के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसका महत्व रोगों के व्यक्तिगत उपचार एवं इनकी रोकथाम पर जोर, समग्र दृष्टिकोण, प्राकृतिक उपचार, अनुसंधान एवं साक्ष्य–आधारित चिकित्सा, सस्टेनेबल हेल्थकेयर और जीवनशैली से संबंधित रोगों के प्रबंधन में निहित है। इन विभिन्न पहलुओं के माध्यम से आयुर्वेद न केवल रोगों के उपचार में सहायक है, बल्कि स्वस्थ जीवन को बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। दूसरे सत्र में नेपाल के ब्रह्मभूमि हेल्थ रिसर्च सेंटर से डॉ. राकेश कुमार सिंह ने मल्टीडाईमेंशनल एप्रोच ऑफ आयुर्वेद फॉर वर्म इंफेस्टेशन विषय पर विशेष व्याख्यान दिया। डॉ. राकेश ने अपने व्याख्यान में कृमि के बारे में विस्तार से बताते हुआ कहा कि आयुर्वेद का बहुआयामी दृष्टिकोण कृमि संक्रमण के प्रबंधन में प्रभावी सिद्ध होता है। इसके उपचार के लिए आयुर्वेद औषधियाँ के साथ–2 अपकर्षण, प्रकृति विघात एवं निदान परिवर्जन प्रमुख सिद्धांत हैं। साथ ही संतुलित आहार, पंचकर्म, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाले उपाय और योग व ध्यान का समन्वय न केवल कृमि संक्रमण को समाप्त करता है बल्कि शरीर के समग्र स्वास्थ्य में भी सुधार करता है। इससे दीर्घकालिक स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होते हैं।

डॉ. मालवीय ने ऐनो रेक्टल डिसीज व पूर्व कुलपति डॉ. मार्कण्डेय आहूजा ने गीता सेल्फ मैनेजमेंट पर व्याख्यान दिया

मानव संसाधन विकास केंद्र द्वारा आयोजित एकमासीय व्याख्यानमाला के पांचवें दिन 17.05.2024 क के प्रथम सत्र में डॉ. सम्पूर्णानन्द आयुर्विज्ञान महाविद्यालय जोधपुर के शल्य विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. अजय मालवीय ने ऐनो रेक्टल डिज़ीज़ एवं इनका प्रबन्धन विषय पर व्याख्यान दिया। ऐनो रेक्टल डिजिज गुदा और मलाशय के क्षेत्र से संबंधित बीमारियों का समूह है। उन्होंने कुछ प्रमुख ऐनो रेक्टल रोगों का विवरण दिया। जिसमें बवासीर, फिशर, फिस्टूला एवं रेक्टल एब्सेस जैसे कई गुदा रोगों के लक्षण, निदान, सर्जिकल उपचार एवं बचाव के तरीकों पर विस्तृत प्रकाश डाला। दूसरे सत्र में सेंट्रल यूनिवर्सिटी गुरुग्राम के पूर्व कुलपति डॉ. मार्कण्डेय आहूजा ने गीता के माध्यम से सेल्फ मैनेजमेंट विषय पर व्याख्यान में कहा कि गीता में वर्णित कर्मयोग, समत्व, स्वधर्म, ध्यान, निर्वेग, और भक्ति योग के सिद्धांत जीवन को संतुलित शांत और सफल में सहायक होते हैं।

ब्रेन स्ट्रोक के बारे में जागरुकता कार्यक्रम आयोजित

यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ होम्योपैथी, जोधपुर द्वारा दिनांक 17 मई 2024 को ब्रेन स्ट्रोक जागरुकता माह–मई, 2024 के दौरान एक दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसके अन्तर्गत अनुबन्ध वृद्धजन कुटीर, मंडोर में डॉ. आभा अग्रवाल ने ब्रेन स्ट्रोक से जुड़े तथ्यों की विस्तृत जानकारी दी। संजीवनी होम्योपैथिक अस्पताल, जोधपुर की डीएमएस डॉ. मनाली त्यागी ने उन्हें उच्च रक्तचाप और ब्रेन स्ट्रोक के सामान्य और होम्योपैथिक प्रबंधन के बारे में जागरुक किया और जीवनशैली संबंधी विकारों में होम्योपैथी के महत्व के बारे में बताया। डॉ. प्रियंका कपूर ने इसकी पहचान के लिए कुछ पहचानने योग्य लक्षणों के बारे में बताया। विशेषज्ञों द्वारा इन विकारों के सामान्य प्रबन्धन हेतु प्रतिदिन कुछ सरल प्राणायाम का अभ्यास करने हेतु प्रेरित किया।

NAAC समिति के प्रो. गोविन्द गुप्ता बने अध्यक्ष

दिनांक 17 मई 2024 को विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. (वैद्य) प्रदीप कुमार प्रजापति ने विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय मूल्यांकन प्रत्यायन और परिषद (NAAC) हेतु नौ सदस्यों की कमेटी का गठन किया गया। रोग निदान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. गोविंद गुप्ता को कमेटी को चेयरमैन नियुक्त किया गया। प्रो. गोविंद गुप्ता ने कहा कि राष्ट्रीय मूल्यांकन व प्रत्यायन परिषद विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों में शिक्षण, अनुसंधान और संसाधनों की गुणवत्ता को मापने और सुधारने के लिए एक महत्वपूर्ण संस्था है। इससे प्रमाणित होने पर विश्वविद्यालय को यूजीसी द्वारा वित्तीय सहायता और अनुदान मिल सकेगा। छात्रों के लिए नैक मान्यता प्राप्त होने पर उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा, बेहतर प्लेसमेंट के अवसर, और उन्नत शोध सुविधाएं प्राप्त हो सकेंगी।

क्षारसूत्र थैरेपी कोर्स के प्रमाण पत्र वितरित

दिनांक 18 मई 2024 को विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. (वैद्य) प्रदीप कुमार प्रजापति द्वारा स्नातकोत्तर शल्य तंत्र विभाग द्वारा संचालित सेमी ऑनलाइन पोस्ट ग्रेजुएट सर्टिफिकेट कोर्स इन क्षार सूत्र थैरेपी के सत्र 2024 के द्वितीय बैच के देश के विभिन्न प्रांतो से आए नौ अभ्यर्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए।

महिला स्वास्थ्य व माहवारी की समस्याओं पर व्याख्यान

सीएचआरडी द्वारा आयोजित हो रही एकमासीय व्याख्यानमाला के छठे दिन 18.05.2024 के पहले सत्र में पीजीआईए, जोधपुर के प्रसूति तंत्र एवं स्त्री रोग विभागाध्यक्ष प्रो. ए. नीलिमा ने ''महिलाओं के स्वास्थ्य एवं माहवारी में होने वाली समस्याओं में आयुर्वेद उपचार'' विषय पर व्याख्यान दिया। प्रो. नीलिमा ने बताया कि आयुर्वेद चिकित्सा महिलाओं के स्वास्थ्य और माहवारी की समस्याओं के लिए एक संपूर्ण और प्रभावी उपचार है। आयुर्वेद के अनुसार स्वस्थ माहवारी तीन दोषों वात पित्त और कफ के संतुलन पर निर्भर करती है। माहवारी से जुड़ी समस्याएं जैसे दर्द, अत्यधिक रक्तस्राव, मेनोरेजिया, रक्तस्राव का अभाव, अमेनोरिया और पॉलिसिस्टिक ओवरी सिंड्रोम आदि रोग महिलाओं के दैनिक जीवन को काफी प्रभावित कर सकते हैं। इस हेतु अशोक, लोध्र, शतावरी, हींग आदि द्रव्यों का प्रयोग, पंचकर्म पद्धति, स्वस्थ आहार, जीवनशैली, योग, प्राणायाम, ध्यान एवं आसन से स्त्री रोगों का उपचार कर सकते हैं।

कुलपति द्वारा प्रिस्क्रिप्शन राइटिंग विषय पर व्याख्यान

मानव संसाधन विकास केंद्र द्वारा आयोजित हो रही एकमासीय व्याख्यानमाला के सातवें दिन 20.05.2024 को विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. (वैद्य) प्रदीप कुमार प्रजापति ने प्रिस्क्रिप्शन राइटिंग विषय पर अपना व्याख्यान दिया। प्रो. प्रजापति ने अपने व्याख्यान में कहा कि प्रिस्क्रिप्शन लेखन एक आवश्यक और बुनियादी कौशल है जिसे एक मेडिकल छात्र द्वारा अपने स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर प्रशिक्षण के समय हासिल किया जाता है। यह एक लिखित व्यवस्था पत्र होता है जो मरीज को दी जाने वाली दवा के बारे में विस्तृत निर्देश देता है। स्नातक स्तर पर प्रिस्क्रिप्शन लेखन कौशल में कमी होने से स्नातकोत्तर छात्रों में भी प्रिस्क्रिप्शन लेखन में व्यापक कमी देखी जाती है। एक श्रेष्ठ चिकित्सक बनने के लिए मरीज का इलाज करते समय उसका व्यवस्था पत्रक अच्छे से लिखना आना चाहिए। एक अच्छी तरह से लिखी गई प्रिस्क्रिप्शन न केवल मरीज की सुरक्षा सुनिश्चित करती है बल्कि उपचार की प्रभावशीलता भी बढ़ाती है। उन्होंने एक बेहतर प्रिस्क्रिप्शन लिखने के बारे में बताते हुए कहा कि प्रिस्क्रिप्शन में स्पष्टता और सटीकता होनी चाहिए मरीज की जानकारी औषधिरू का सही नाम मात्रा खान–पान संबंधित दिशा–निर्देशों का समावेश होना चाहिए। इसी दिन अन्य सत्र में AIIMS जोधपुर के कम्यूनिटी मेडिसिन के सह आचार्य डॉ. सुमन सौरभ ने एपिडेमियोलॉजी ऑफ डायटरी रिस्क फैक्टर पर व्याख्यान दिया। डॉ. सुमन ने अपने व्याख्यान में बताया कि आजकल के ज्यादातर रोगों का कारण गलत खान–पान ही हैं। भोजन जीवन का आधार है लेकिन व्यस्त जीवनशैली की वजह से सही खान– पान का नहीं कर पाना कई रोगों का कारण बन रहा है। विभिन्न आहार तत्व और भोजन की आदतें स्वास्थ्य पर प्रभाव डालती हैं और ये स्वास्थ्य संवर्धन एवं बीमारियों का कारण बन सकती हैं। विपरीत स्थिति में ये हृदय रोग मधुमेह कैंसर मोटापा आदि स्वास्थ्य समस्याओं का कारण होती हैं। उन्होंने आईसीएमआर की गाइडलाइन के बारे में बताया कि संतुलित मात्रा में फल सब्जियां साबुत अनाज और प्रोटीन युक्त खाद्य पदार्थों का सेवन करना चाहिए। शर्करा, वसा एवं उच्च नमक वाले खाद्य पदार्थों का सीमित सेवन करना चाहिए।

बहुआयामी उपचार से स्वास्थ्य का प्रबंधन विषयक व्याख्यान

सीएचआरडी द्वारा आयोजित हो रही एकमासीय व्याख्यानमाला के आठवें दिन 21.05.2024 के पहले सत्र में जिला टीबी चिकित्सालय से सेवानिवृत्त डॉ. नंद किशोर ने बहुआयामी उपचार के माध्यम से स्वास्थ्य की उचित चिकित्सा के लिए संभावनाएं और चुनौतिया विषय पर अपना व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि बहुआयामी माध्यमों से चिकित्सा करने से हम संपूर्ण स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सकते है। यह दृष्टिकोण न केवल रोगों से मुक्त रहने में सहायक है बल्कि एक सुखी और संतुलित जीवन जीने में भी मदद करता है। बहुआयामी चिकित्सा केवल शारीरिक स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है बल्कि मानसिक सामाजिक और भावनात्मक पहलुओं को भी शामिल करती है। उन्होंने देश में उपलब्ध हर चिकित्सा पद्धति को बराबर महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि एलोपैथी के साथ–साथ आयुर्वेद और अन्य देशीय पद्धतियों का एक ही ध्येय सभी के स्वास्थ्य का संरक्षण करना है। दूसरे सत्र में मानसरोवर ग्लोबल यूनिवर्सिटी भोपाल के रसशास्त्र के विभागाध्यक्ष प्रो. पवन कुमार शर्मा ने चिकित्सा के लिए संभावनाएं और चुनौतियां विषय पर अपना व्याख्यान दिया। प्रो. शर्मा ने अपने व्याख्यान में बताया कि चिकित्सा अभ्यास एक प्रतिष्ठित और चुनौतीपूर्ण क्षेत्र है। इसमें अनेक संभावनाएँ और अवसर हैं लेकिन साथ ही कई चुनौतियाँ भी हैं। इन चुनौतियों का समाधान खोजकर और नई तकनीकों को अपनाकर हम चिकित्सा क्षेत्र में महत्वपूर्ण सुधार कर सकते हैं। चिकित्सकों और स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़े सभी व्यक्तियों का कर्तव्य है कि वे निरंतर सीखते हुए अपने ज्ञान और कौशल को अद्यतन कर समाज के सभी वर्गों तक स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच सुनिश्चित करें।

प्रसूति विज्ञान में निदान की उन्नत तकनीकें एवं वैश्विक परिदृश्य में कौमारभृत्य विषय पर व्याख्यान

सीएचआरडी द्वारा आयोजित हो रही एकमासीय व्याख्यानमाला के नौवें दिन 22.05.2024 के प्रथम सत्र में बालाजी अस्पताल, जोधपुर में स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. सीमा शर्मा ने प्रसूति विज्ञान सम्बन्धी नैदानिक तकनीकों में अद्यतन प्रगति विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि प्रसूति विज्ञान में निदान की उन्नत तकनीकें गर्भावस्था के दौरान मां और बच्चे के स्वास्थ्य की निगरानी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इन तकनीकों के विकास से गर्भावस्था संबंधी जटिलताओं का शीघ्र पता लगाना और उनका प्रबंधन करना संभव हो गया है। हाल के वर्षों में, 3डी और 4डी अल्ट्रासाउंड की शुरुआत ने भ्रूण की संरचना और गतिविधियों को अधिक स्पष्ट रूप से देखने की सुविधा दी है। एमनियोसेंटेसिस और कोरियोनिक विलस सैंपलिंग (सीवीएस) और नॉन–इनवेसिव प्रीनेटल टेस्टिंग (एनआईपीटी) महिला के रक्त से भ्रूण के डीएनए का परीक्षण करके डाउन सिंड्रोम और अन्य आनुवंशिक विकारों का पता लगा सकते हैं। इसके अलावा, कई नई तकनीकें विकसित की गई हैं जैसे भ्रूण चुंबकीय अनुनाद इमेजिंग

(एफएमआरआई), कोशिका–मुक्त भ्रूण डीएनए परीक्षण, डॉपलर अल्ट्रासाउंड आदि। दूसरे सत्र में बालरोग विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. दिनेश राय ने वैश्विक परिदृश्य में कौमारभृत्य विषय पर व्याख्यान दिया। डॉ. राय ने कहा कि वैश्विक परिदृश्य में कौमारभृत्य का महत्व और भी बढ़ गया है, क्योंकि यह बच्चों की देखभाल के लिए एक समग्र और प्राकृतिक दृष्टिकोण प्रदान करता है। जो शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य का समन्वय करता है। आयुर्वेद औषधियों और उपचारों यथा स्वर्ण प्राशन, तुलसी, अश्वगंधा, गिलोय आदि के माध्यम से बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। इसमें उचित शिक्षा, अनुसंधान और मानकीकरण के साथ, कौमारभृत्य वैश्विक स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

बेसिक्स ऑफ चेस्ट एक्स–रे व ग्रन्थि शारीर पर व्याख्यान

सीएचआरडी द्वारा आयोजित हो रही एकमासीय व्याख्यानमाला के दसवें दिन 23.05.2024 के प्रथम सत्र में पीजीआईए के स्नातकोत्तर बालरोग विभागाध्यक्ष डॉ. हरीश कुमार सिंघल ने बेसिक्स ऑफ चेस्ट एक्स–रे विषय पर व्याख्यान में बताया कि एक्स–रे एक प्रकार का विकिरण है जिसका उपयोग शरीर के अंदर अंगों की संरचना के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए किया जाता है। विकिरण परीक्षा में शरीर में विभिन्न संरचनाएं जैसे हड्डियां और कोमल ऊतक अलग–अलग तरीके से अवशोषित होती हैं और इनका एक छवि बनाने के लिए उपयोग होता है। एक्स–रे विद्युत चुम्बकीय विकिरण के रूप में चिकित्सा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपकरण है जिसके माध्यम से छाती की संरचना की स्पष्ट छवि प्राप्त की जाकर सही निदान और उपचार संभव हो पाता है। उन्होंने बताया कि एक्स–रे फेफड़ों के संक्रमण (निमोनिया), फेफड़ों की सूजन (ब्रोंकाइटिस), हृदय का आकार और आकृति, फेफड़ों में तरल पदार्थ भरना और पसलियों और शरीर के अन्य हिस्सों में हड्डी के फ्रैक्चर के निदान में सहायक होते हैं। दूसरे सत्र में सीएचआरडी के निदेशक डॉ. राकेश कुमार शर्मा ने आयुर्वेद में ग्रन्थि शारीर विषय पर व्याख्यान दिया। डॉ. शर्मा ने आयुर्वेद में ग्रन्थि शारीर विषयक ज्ञान के बारे में विस्तार से बताया। उन्होने कहा कि चिकित्सा के क्षेत्र में ग्रंथियों की शारीरिक रचना का अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण है। यह शरीर के महत्वपूर्ण कार्यों को नियंत्रित करने वाली ग्रंथियों और उनके हार्मोन को समझने में मदद करता है। शरीर की वृद्धि और विकास, चयापचय, प्रजनन और यौन विकास, तनाव प्रतिक्रिया, रक्तचाप और इलेक्ट्रोलाइट संतुलन जैसे महत्वपूर्ण कार्य ग्रंथियों द्वारा किए जाते हैं। उन्होंने पिट्यूटरी ग्रंथि, थायरॉयड ग्रंथि, पैराथायराइड, अधिवृक्क ग्रंथि, अग्न्याशय, जननग्रंथि जैसी सभी ग्रंथियों की शारीरिक रचना, शरीर में उनकी स्थिति, कार्यप्रणाली और आयुर्वेद और आधुनिक विचारों के अनुसार होने वाले रोगों पर विस्तृत प्रकाश डाला। ग्रंथियों में असामान्यताएं कई स्वास्थ्य समस्याओं जैसे हाइपो व हाइपरथायरायडिज्म और मधुमेह आदि का कारण बन सकती हैं।

योग विशेषज्ञ डॉ. चन्द्रभान ने करवाया योगाभ्यास

योग व नैचुरोपैथी महाविद्यालय के प्राचार्य एवं योग विशेषज्ञ डॉ. चन्द्रभान शर्मा ने पतंजलि योग समिति, पीपाड़ द्वारा आयोजित कार्यक्रम में दिनांक 1 मई से 25 मई 2024 तक संचालित योग शिविर के अंतर्गत 24.05.2024 को प्रातःकालीन सत्र में प्रातः 5 बजे से 7 बजे मधुमेह, थायराइड, मोटापा, पीसीओएस इत्यादि विकृत जीवन शैलीजन्य विकारों के समुचित प्रबंधन हेतु तितली क्रिया, सूर्य नमस्कार, जानुशीर्षासन, भुजंगासन, वक्रासन, कपालभाति, अनुलोम विलोम, प्राणायाम एवं चक्र ध्यान का योगाभ्यास करवाया गया। साथ ही विश्वविद्यालय में संचालित विभिन्न पाठ्यक्रमों एवं चिकित्सा सुविधाओं व विश्वविद्यालय में स्थापित योग साधना एवं मंत्र चिकित्सा अध्ययन केंद्र व निर्माणाधीन गुफा ध्यान के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। इस शिविर में लगभग 1000 लोगों ने भाग लिया।

ईएनटी रोगों का उपचार विषय पर व्याख्यान

सीएचआरडी द्वारा आयोजित हो रही एकमासीय व्याख्यानमाला के ग्यारहवें दिन 24.05.2024 को राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर के शालाक्य विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. शम्सा फियाज ने प्रतिश्याय–कारण, रोकथाम और उपचार और संबंधित रोगों के सामान्य उपचार विषयक व्याख्यान में नाक, कान और गले के बारे में बताते हुए कहा कि आयुर्वेद में प्रतिश्याय को दोष असंतुलन के नजरिये से समझा जाता है। नाक में सूखापन, छींक आना, सिरदर्द, नाक से पानी आना, नाक में जलन, बुखार, चिड़चिड़ापन और गले में खराश जैसे कई लक्षण होते हैं। उन्होंने कहा कि खान–पान में बदलाव, जीवनशैली में बदलाव, पंचकर्म चिकित्सा और विशिष्ट आयुर्वेदिक उपचार आदि से इसे ठीक किया जा सकता है। तुलसी, हल्दी, गिलोय, लक्ष्मीविलास रस और अणु तेल के नस्य का प्रयोग करना चाहिए। उन्होंने ओटाइटिस मीडिया, ओटाइटिस एक्सटर्ना,

राइनाइटिस, साइनुसाइटिस, टॉन्सिलिटिस, ग्रसनी शोथ, खर्राटे और स्लीप एपनिया के लिए आयुर्वेद उपचार विधि के बारे में विस्तार से बताया।

चिकित्सा साफल्य हेतु शास्त्रोक्त दशविध परीक्षा पर व्याख्यान

सीएचआरडी द्वारा आयोजित हो रही एकमासीय व्याख्यानमाला के बारहवें दिन 25.05.2024 को राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर के क्रिया शारीर विभागाध्यक्ष प्रो. सी आर यादव ने दशविध परीक्षा विषय पर व्याख्यान में बताया कि रोगी एवं रोग का परीक्षण करने के लिए चरक संहिता में वर्णित दश प्रकार की परीक्षा करने का उल्लेख मिलता है यह रोगी की जैविक और आध्यात्मिक समीक्षा के लिए व्यापक परीक्षा है और सबसे महत्वपूर्ण है। किसी भी उपचार हेतु प्रोटोकॉल को तय करने से पहले रोग और रोगी की स्थिति जानने के लिए यह परीक्षा अत्यावश्यक है । इसमें रोगी की प्रकृति, रोग की विकृति, रोगी का सार संहनन, प्रमाण, सात्म्य, सत्व, आहार शक्ति, व्यायाम शक्ति एवं वय का विश्लेषण के माध्यम से रोग का निदान कर चिकित्सा की जाती है। विकृति और सत्त्व जैसी परीक्षाओं से रोग की गहराई और मानसिक स्थिति का ज्ञान होता है। इससे न केवल रोगों का उपचार होता है बल्कि रोगों की रोकथाम और स्वास्थ्य का समग्र सुधार भी संभव होता है। दूसरे सत्र में एसबीएलडी आयुर्वेद महाविद्यालय सरदारशहर के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. सुरेश सोलंकी ने बंध्यत्व में पंचकर्म चिकित्सा की भूमिका विषय पर व्याख्यान में बताया कि पंचकर्म शरीर को शुद्ध करने और संतुलन बनाएं रखने की प्रक्रियाओं का एक समूह है। बांझपन (इनफर्टिलिटी) के उपचार में पंचकर्म की भूमिका के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि बंध्यत्व के रोगी में पंचकर्म से शरीर की शुद्धि, हार्मोनल संतुलन, ओव्यूलेशन और शुक्राणु गुणवत्ता में सुधार, मानसिक शांति और तनाव में कमी एवं प्रजनन अंगों की शुद्धि कर बंध्यत्व का उपचार किया जाता है। बांझपन के लिए पंचकर्म चिकित्सा में उत्तर बस्ति दी जाती है जिसमें औषधीय तेलों और काढ़ों का गर्भाशय और मूत्राशय में प्रयोग किया जाता है। पंचकर्म के नियमित और सही उपयोग से बांझपन की समस्या को प्रभावी ढंग से नियंत्रित किया जा सकता है और स्वस्थ गर्भधारण की संभावनाएं बढ़ाई जा सकती हैं।

विश्व थायरॉइड जागरुकता दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ होम्योपैथी जोधपुर द्वारा दिनांक 25 मई 2024 को मण्डोर गार्डन जोधपुर में विश्व थायरॉइड जागरुकता दिवस के अवसर पर एक जागरुकता शिविर का आयोजन किया गया। इसमें उपस्थित लोगो को डॉ. अभिषेक भारद्वाज ने हाइपरथायरायडिज्म व हाइपोथायरायडिज्म से सम्बन्धित लक्षणों यथा हृदय की धड़कन बढ़ना एवं कम होना, कंपकंपी, घबराहट महसूस होना, भूख में वृद्धि या कमी होना, दस्त का होना, सूखी त्वचा का होना, महिलाओं में मासिक धर्म में अनियमितता का होना, नींद की समस्या या कमजोरी महसूस होना एवं बालों के झड़ने के आदि रोगों से अवगत करवाया। डॉ. राकेश कुमार मीना ने थायरॉइड से सम्बन्धी लक्षणो को नियंत्रित करने के लिए घरेलू उपाय के रूप में लोकी व टमाटर का रस, नारियल व नींबू पानी, प्याज, लहसुन एवं आयोडिन का उपयोग करने की सलाह दी। साथ ही थायरॉइड से सम्बन्धित होम्योपैथिक दवाईयों की जानकारी प्रदान की गई।

विश्वविद्यालय में फैकल्टी रि–ओरिएंटेशन कार्यक्रम प्रारम्भ

दिनांक 27 मई 2024 को मानव संसाधन विकास केन्द्र एवं यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ होम्योपैथी के सहयोग से सभी संकाय सदस्यों के लिए विश्वविद्यालय परिसर में छह दिवसीय फैकल्टी री–ओरिएंटेशन कार्यक्रम शुरू हुआ। पहले सत्र में डॉ. दिनेश चहल ने शिक्षा जगत में शैक्षणिक नेतृत्व का महत्व तथा उच्च शिक्षा में शिक्षकों की भूमिका एवं जिम्मेदारी विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि शिक्षा विद्यार्थियों में प्राण प्रतिष्ठा करने का कार्य करती है। अच्छे शिक्षक के लिए ये आवश्यक है कि वह अपने बच्चे एवं अपने विद्यार्थी को समान भाव से देखे। डॉ. चहल ने कहा कि पुराने समय के आवश्यक टूल में आज काफी परिवर्तन हुआ है। हमें पाश्चात्य ज्ञान के साथ अपने मौलिक ज्ञान को नहीं भूलना चाहिए। डॉ. चहल ने अनेकों उदाहरण देकर समझाया और कहा कि शिक्षकों को आपस में अपने विचारों का मंथन करना चाहिए। इस अवसर पर कुलसचिव प्रो. गोविंद सहाय शुक्ला ने कहा कि ये कार्यक्रम संकाय सदस्यो एवं स्नातकोत्तर अध्येताओं के अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा।

मानव संसाधन विकास केन्द्र के निदेशक डॉ. राकेश शर्मा ने कार्यक्रम का विस्तृत परिवेदन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में प्राचार्य प्रो. महेंद्र शर्मा, प्रो. गोविंद गुप्ता, डॉ गौरव नागर, कार्यक्रम समन्वयक डॉ. राजीव खन्ना और सह समन्वयक डॉ. नरेन पटवा सहित पीजीआईए, यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ होम्योपैथी कॉलेज जोधपुर एवं केकड़ी, यूनिवर्सिटी योग नेचुरोपैथी महाविद्यालय, जोधपुर व यूनिवर्सिटी यूनानी महाविद्यालय टोंक के संकाय सदस्य वं स्नातकोत्तर अध्येता

उपस्थित रहे। विश्वविद्यालय के केकड़ी एवं टोंक के आंगिक महाविद्यालयों के शिक्षक आॅनलाईन जुड़े। कार्यक्रम संचालन डॉ यशस्वी शाकद्वीपीय ने किया।

आंगनवाड़ी कर्मियों को मानसिक स्वास्थ्य हेतु जागरुक किया

दिनांक 28 मई 2024 को यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ होम्योपैथी, जोधपुर की ओर से मानसिक स्वास्थ्य जागरुकता माह के उपलक्ष में होम्योपैथी विशेषज्ञों डॉ. मनाली त्यागी एवं डॉ. प्रियंका कपूर ने आंगनवाड़ी–घडाव में मानसिक स्वास्थ्य जागरुकता अभियान की पहली श्रृंखला का आयोजन किया गया। डॉ. मनाली त्यागी ने मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित सभी मौजूदा तथ्यों लक्षणों के बारे में जागरुक किया। उन्होंने अच्छे मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में होम्योपैथी के महत्व को बताया। डॉ. प्रियंका कपूर ने आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को मानसिक तनाव का कारण बनने वाली समस्याओं को साझा करने और चर्चा करने का अवसर दिया तथा मन की शांति प्राप्त करने के लिए स्वस्थ आदतों और जीवनशैली में बदलाव के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

हेल्थकेयर एजुकेशन में गुणवत्ता प्रबंधन पर व्याख्यान

मानव संसाधन विकास केन्द्र एवं यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ होम्योपैथी के सहयोग से आयोजित फैकल्टी री–ओरिएंटेशन कार्यक्रम के दूसरे दिन 28.05.2024 को प्रो. मिलिंद कुमार शर्मा निदेशक आईक्यूएसी, एमबीएम यूनिवर्सिटी जोधपुर ने हेल्थकेयर एजुकेशन में गुणवत्ता प्रबंधन पर व्याख्यान में भारत में संचालित स्वास्थ्य देखभाल वितरण प्रणाली के बारे में बताया। उन्होंने इससे सम्बन्धित गुणवत्ता नीति निर्माण, गुणवत्ता योजना, इसका कार्यान्वयन, गुणवत्ता नियंत्रण आदि के बारे में विस्तार से बताया। दूसरे सत्र में उन्होंने प्रधानमंत्री उच्चतर शिक्षा अभियान (पीएम उषा योजना) के बारे में बताया कि यह राज्यों, केंद्र शासित प्रदेशों के संस्थानों को वित्त पोषित करने के लिए एक केंद्र प्रायोजित योजना है जिसका उद्देश्य राज्य की उच्च शिक्षा प्रणाली में उच्च स्तर की पहुंच, समानता और उत्कृष्टता हासिल करना है। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अंकिता उपाध्याय ने किया।

स्वास्थ्य सेवा गुणवत्ता में सुधार हेतु NABH अत्यंत महत्वपूर्ण

मानव संसाधन विकास केन्द्र एवं यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ होम्योपैथी, जोधपुर के सहयोग से आयोजित फैकल्टी री–ओरिएंटेशन कार्यक्रम के तीसरे दिन 29.05.2024 को एनएबीएच नई दिल्ली की उपनिदेशक डॉ. काशिपा ने NABH मान्यता मानकों के कार्यान्वयन में कठिनाइयाँ विषय पर व्याख्यान दिया। डॉ. काशिपा ने बताया कि NABH प्रत्यायन अस्पताल की चिकित्सकीय गुणवत्ता एवं मरीजों को मिलने वाली बेहतर सुविधाओं का प्रमाण हैं। अस्पताल को राष्ट्रीय प्रत्यायन बोर्ड फॉर हॉस्पिटल्स एंड हेल्थकेयर प्रोवाइडर्स (NABH) द्वारा निर्धारित प्रत्यायन मानकों का कार्यान्वयन एक चुनौती वाला काम है जिसमें कई कठिनाईयां आती है जैसे प्रशिक्षित और योग्य स्टाफ, प्रशिक्षण और जागरुकता, गुणवत्ता सुधार व मानकीकरण के प्रति प्रतिबद्धता की कमी, दस्तावेज़ीकरण, आवश्यक आधारभूत संरचना यथा सुविधाएं उपकरण और तकनीकी संसाधनों का अभाव आदि। दूसरे सत्र में डॉ. काशिपा ने उक्त सभी समस्याओं के समाधान पर प्रकाश डाला। अंत में उन्होंने कहा कि इन कठिनाइयों के बावजूद एनएबीएच प्रत्यायन मानकों का अनुपालन स्वास्थ्य सेवा की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। उचित योजना, प्रशिक्षण और संसाधनों के माध्यम से इस लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

एनएबीएच के मानकों पर आयोजित हुआ व्याख्यान

मानव संसाधन विकास केन्द्र एवं यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ होम्योपैथी, जोधपुर के सहयोग से आयोजित फैकल्टी री–ओरिएंटेशन कार्यक्रम के चौथे दिन 30.05.2024 को AIIMS जोधपुर में एसोसिएट प्रोफेसर एवं उपाधीक्षक डॉ. रुचि गर्ग ने एनएबीएच के मानकों को समझने और उन्हें प्रभावी ढंग से लागू करने के प्रशिक्षण विषय पर व्याख्यान दिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अंकिता आचार्य ने किया।

गोदग्राम भटिंडा में आयोजित हुआ चिकित्सा शिविर

दिनांक 30 मई 2024 को विश्वविद्यालय के गोदग्राम भटिंडा में निशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। नोडल अधिकारी प्रो. गोविंद कुमार गुप्ता व कार्यक्रम समन्वयक एवं सह नोडल अधिकारी डॉ. संजय श्रीवास्तव ने बताया एक दिवसीय शिविर में डॉ. अजीत सिंह चारण ने लू एवं तापघात के स्वास्थ सुरक्षा की जानकारी दी। बैंक प्रबंधक दिनेश कुमार ने जन समूह को वित्तीय प्रबंधन एवं बैंक सहायता की जानकारी दी। शिविर में विश्वविद्यालय की टीम ने लू, हैजा, जानु शूल, वातरोग, त्वक् विकार, दौर्बल्य, कास, श्वास, उदर रोग, नेत्र विकार, अम्लपित, विबंध व स्त्री रोगों से पीड़ित 42 रोगियों को शिविर में चिकित्सा परामर्श एवं निःशुल्क औषधि वितरण किया। शिविर में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा महाविद्यालय के असि. प्रोफेसर डॉ. अजीतसिंह चारण, स्नातकोत्तर अध्येता द्रव्यगुण विभाग डॉ. सुरेश कुमार, नर्सिंगकर्मी दिनेश चौधरी, सत्यनारायण प्रजापत तथा चालक श्रवण ने सेवाएं दीं।

शैक्षणिक विशेषज्ञता एवं शिक्षण तकनीक विषय पर व्याख्यान

मानव संसाधन विकास केन्द्र एवं यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ होम्योपैथी, जोधपुर के सहयोग से आयोजित फैकल्टी री–ओरिएंटेशन कार्यक्रम के पांचवें दिन 31.05.2024 को वनस्थली विद्यापीठ विश्वविद्यालय के शिक्षा शास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. अजय सुराणा ने शैक्षणिक विशेषज्ञता एवं शिक्षण तकनीक विषय पर व्याख्यान में कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न शिक्षण तकनीकें और अधिगम विधियाँ उपयोग की जाती हैं। उन्होंने कुछ प्रमुख शिक्षण तकनीकी और अधिगम विधियाँ बताते हुए कहा कि लेक्चर विधा सबसे प्राचीन एवं सबसे प्रभावशाली तरीका है। प्रश्नोत्तर विधि में शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच सक्रिय संवाद होता है। ग्रुप डिस्कशन सामूहिक अधिगम, प्रयोगात्मक शिक्षण विधि, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, समस्या आधारित अधिगम, छात्रों की स्वतंत्र सोच और समस्या समाधान क्षमता को विकसित करती है। सहयोगी अधिगम विधि से टीमवर्क और संवाद कौशल को बढ़ावा मिलता है। मल्टीमीडिया शिक्षण विधि में वीडियो, ऑडियो और इंटर एक्टिव सॉफ्टवेयर आदि का उपयोग किया जाता है। दूसरे सत्र में प्रो. सुराणा ने शिक्षण अधिगम और मूल्यांकन में प्रौद्योगिकी का प्रभावी उपयोग विषय पर व्याख्यान में बताया कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में तकनीकी का बढ़ता उपयोग शिक्षण अधिगम व मूल्यांकन को अधिक प्रभावी और आकर्षक बना सकता है। आज ऑनलाइन शिक्षण, ई–लर्निंग प्लेटफार्म, इंटर एक्टिव शैक्षिक सॉफ्टवेयर, डिजिटल पाठ्यपुस्तकें और ई बुक्स मल्टीमीडिया प्रस्तुति, वर्चुअल लैब्स, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आदि के उपयोग से शिक्षा अधिक प्रभावी, समृद्ध व समावेशी बन सकती है।

छः दिवसीय री–ओरिएंटेशन कार्यक्रम सम्पन्न

दिनांक 1 जून 2024 को मानव संसाधन विकास केन्द्र एवं यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ होम्योपैथी, जोधपुर द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित छः दिवसीय फैकल्टी रि–ओरिएंटेशन कार्यक्रम का समापन हुआ। इस अवसर पर कुलपति प्रो. प्रजापति ने कहा कि यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं अध्येताओं के शैक्षणिक ज्ञान को बढ़ाने के लिए आयोजित किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य शिक्षकों को अपने शैक्षणिक एवं व्यावसायिक कर्तव्यों को प्रभावी ढंग से निभाने में मदद करना तथा संस्थान के लक्ष्यों को प्राप्त करने में योगदान देना है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर के कुलपति प्रो. (डॉ.) बी आर चौधरी ने अपने उद्बोधन में कहा कि ऐसे कार्यक्रमों से शिक्षकों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होता है। अतः ऐसे कार्यक्रम निरन्तर आयोजित होते रहने चाहिएं। मानव संसाधन विकास केन्द्र के निदेशक ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। प्रशिक्षण के इस अन्तिम छठे दिन प्रथम सत्र में ट्रांस डिसिप्लिनरी रिसर्च फाउंडेशन, नई दिल्ली के निदेशक डॉ. सुकेश त्रिखा ने NAAC एक्रेडिटेशन हेतु संगठनात्मक विकास विषयक व्याख्यान में बताया कि NAAC एक्रेडिटेशन भारतीय विश्वविद्यालयों एवं उच्च शिक्षा संस्थानों की गुणवत्ता को मापने एवं सुधारने के लिए एक महत्वपूर्ण मानक है। इससे संस्था में शिक्षण, शोध एवं संसाधनों की गुणवत्ता का आकलन एवं शैक्षणिक एवं प्रशासनिक उत्कृष्टता का प्रमाणन होता है। दूसरे सत्र में टीआर फाउंडेशन, नई दिल्ली के निदेशक डॉ. रंजू एंथोनी ने अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य देखभाल एजेंसियों के साथ परियोजनाओं का सहयोग एवं क्रियान्वयन विषयक व्याख्यान में कहा कि स्वयं को आगे बढ़ाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य देखभाल एजेंसियों के साथ सहयोग आवश्यक है।

परियोजनाओं का क्रियान्वयन एक जटिल किन्तु महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जो उचित नियोजन, समन्वय एवं संचार से संभव होता है। कार्यक्रम के अंत में 10वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित होने वाली गतिविधियों पर एक कर्टेन रेजर कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस दौरान यूनिवर्सिटी योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा महाविद्यालय के

प्राचार्य डॉ. चंद्रभान शर्मा ने भ्रामरी, चक्र ध्यान का अभ्यास कराया। इसी अवसर पर विश्वविद्यालय की नई वेबसाइट www.rauonline.in को भी लांच किया गया। कार्यक्रम में कुलसचिव प्रो. गोविन्द सहाय शुक्ल, पीजीआईए प्राचार्य प्रो. महेन्द्र शर्मा, प्राचार्य यूसीएच, जोधपुर डॉ. गौरव नागर सहित पीजीआईए, होम्योपैथी महाविद्यालय, योग, नेचुरोपैथी महाविद्यालय जोधपुर, यूनानी महाविद्यालय टोंक एवं होम्योपैथी महाविद्यालय केकड़ी के विभागाध्यक्ष, शिक्षक, पीजी अध्येता उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. राजीव खन्ना एवं डॉ. अंकिता ने किया।

डॉ. चन्द्रेश तिवारी एवं डॉ. नंद किशोर दाधीच के अतिथि व्याख्यान का आयोजन

दिनांक 03.06.2024 को सीएचआरडी द्वारा आयोजित डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् व्याख्यान माला के प्रथम सत्र में राजकीय आयुर्वेद चिकित्सालय कोटा के डॉ. चन्द्रेश तिवारी ने दर्द प्रबंधन में अग्निकर्म की भूमिका विषय पर व्याख्यान में बताया कि अग्निकर्म का प्रयोग विशेष रूप से दर्द प्रबंधन में किया जाता है। इसमें एक विशेष धातु उपकरण (अग्निकर्म शलाका) को गर्म करके शरीर के दर्द वाले या प्रभावित भाग पर त्वरित और नियंत्रित रूपेण स्पर्श करवाते है। अग्निकर्म शोथ व तंत्रिका तंत्र को शांत करने व दर्द में लाभकारी है। दूसरे सत्र में उत्तराखंड आयुर्वेद विश्वविद्यालय, देहरादून के क्रियाशरीर विभागाध्यक्ष के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. नंद किशोर दाधीच ने प्रयोगशाला स्तर पर विभिन्न दोषों, धातुओं और मलों का मूल्यांकन विषय पर व्याख्यान में बताया कि दोष व धातुओं का परीक्षण चिकित्सा का एक महत्वपूर्ण अंग है। आधुनिक प्रयोगशाला परीक्षणों से उनकी स्थिति के सटीक आकलन से व्यक्तिगत स्वास्थ्य और उपचार योजना में काफी सुधार हो सकता है।

पंचकर्म विभाग में अग्निकर्म पर एक कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 3 जून 2024 को पंचकर्म विभाग में आयोजित अग्निकर्म कार्यशाला में पंचकर्म विभागाध्यक्ष डॉ. ज्ञान प्रकाश शर्मा ने कहा कि आचार्य सुश्रुत ने क्षार सूत्र, जलोका (जोंक) उपचार, रक्तमोक्षण उपचार के साथ–साथ अग्निकर्म उपचार का भी वर्णन किया है। अग्निकर्म एक सदियों पुरानी तकनीक है जिसमें लोहे, चांदी, तांबा, कांस्य या मिश्र धातु से बने अग्निकर्म शलाका को गर्म कर शरीर के दर्द वाले हिस्से पर लगाने से राहत मिलती है। इस दौरान पंचकर्म विभाग में इलाज करा रहे सभी मरीज एवं संकाय सदस्य, सभी पीजी स्कॉलर एवं स्नातक छात्र उपस्थित थे।

डॉ. हरीश भाकुनी एवं डॉ. संकल्प शर्मा के अतिथि व्याख्यान आयोजित

दिनांक 4 जून 2024 को सीएचआरडी द्वारा आयोजित व्याख्यानमाला के प्रथम सत्र में एनआईए, जयपुर के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. हरीश भाकुनी ने मधुमेह का नैदानिक वैशिष्ट्य विषयक व्याख्यान में कहा कि मधुमेह एक क्रोनिक बीमारी है जिसमें शरीर में ग्लूकोज का स्तर सामान्य से अधिक हो जाता है। मोटापा, शारीरिक निष्क्रियता, ख़राब आहार और आनुवंशिक गड़बड़ी मधुमेह के कारण हो सकते हैं। यह बीमारी शरीर के पर्याप्त इंसुलिन का उत्पादन नहीं करने या इंसुलिन का ठीक से उपयोग करने में असमर्थ होने से होती है। जीवनशैली में बदलाव जैसे नियमित व्यायाम और वजन नियंत्रण, संतुलित और पौष्टिक आहार, शहद का सेवन, नियमित स्वास्थ्य जांच आदि से मधुमेह का इलाज किया जा सकता है।

आयुर्वेद के अनुसार, करेला, जामुन जैसी औषधियों से तैयार मधुमेहारि चूर्ण से मधुमेह को रोका जा सकता है। दूसरे सत्र में डॉ. भाकुनी ने त्वचा विज्ञान के सिद्धांत विषय पर व्याख्यान में बताया कि त्वचा रोगों का मूल कारण रक्त धातु की खराबी है। मिर्च मसालों, गर्म कड़वे पदार्थों के अधिक सेवन से दोषों के प्रकोप से त्वचा में रूखापन, खुरदरापन और असमान त्वचा जैसे लक्षण होते हैं। तीसरे सत्र में पीजीआईए में सहायक प्रोफेसर डॉ. संकल्प शर्मा ने पांडुलिपि विज्ञान विषय पर व्याख्यान में पांडुलिपियों की महत्ता और इसके अध्ययन की विशेषताओं का विश्लेषण किया।

प्रो. श्रीकृष्ण शर्मा के अतिथि व्याख्यान का आयोजन

दिनांक 5 जून 2024 को सीएचआरडी द्वारा आयोजित व्याख्यानमाला के प्रथम सत्र में नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ आयुर्वेद जयपुर से सेवानिवृत्त एवं आरोग्य लक्ष्मी आयुर्वेद मेडिकल सेंटर, जयपुर के निदेशक एवं विश्वविद्यालय की संस्थागत आचार समिति के अध्यक्ष प्रो. श्रीकृष्ण शर्मा ने स्रोतस्–ए पैथो–फिजियोलॉजिकल पर्सपेक्टिव विषय पर व्याख्यान में बताया कि आयुर्वेद में स्रोतस् शरीर के अंदर और बाहर के विभिन्न मार्गों को संदर्भित करता है, जो पदार्थों के परिवहन के लिए जिम्मेदार होते हैं। ये स्रोत शरीर की संरचनात्मक और कार्यात्मक इकाइयाँ हैं जो पोषक तत्वों, अपशिष्ट पदार्थों और ऊर्जा के परिवहन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। दूसरे सत्र में प्रो. शर्मा ने रोग की अभिव्यक्ति में अग्नि का महत्व विषय पर व्याख्यान में बताया कि मानव शरीर में अग्नि (पाचकाग्नि) का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। आयुर्वेद के अनुसार अग्नि न केवल भोजन पचाती है, बल्कि स्वास्थ्य और रोग दोनों की उत्पत्ति में भी प्रमुख भूमिका निभाती है।

विश्व पर्यावरण दिवस पर सेमिनार का आयोजन

यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ होम्योपैथी, केकड़ी में विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर दिनांक 5 जून 2024 को आयुष मंत्रालय के निर्देशानुसार पर्यावरण संरक्षण एवं उसकी उपयोगिता हेतु आयोजित एक सेमिनार में समस्त शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक स्टाफ एवं विद्यार्थियों ने ऑफलाईन एवं ऑनलाइन भाग लिया। इस अवसर पर पर्यावरण बचाने की शपथ ली गई और औषधीय पौधे लगाए गये। सर्जरी विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. स्वाति शर्मा ने सभी को विश्व पर्यावरण दिवस मनाने के महत्त्व और पर्यावरण संरक्षण की उपयोगिता के बारे में बताया। फार्मेसी विभागाध्यक्ष डॉ. राजेश मीना ने पर्यावरण संरक्षण व उससे जुड़े आंदोलन के बारे में जानकारी दी।

प्रो. महेश व्यास एवं डॉ. गालिब के अतिथि व्याख्यान आयोजित

दिनांक 6 जून 2024 को सीएचआरडी द्वारा आयोजित व्याख्यानमाला के प्रथम सत्र में अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान दिल्ली के डीन रिसर्च एवं मौलिक सिद्धान्त विभागाध्यक्ष प्रो. महेश व्यास ने आयुर्वेद संहिता में नैदानिक अभ्यास विषय पर व्याख्यान में बताया कि आयुर्वेद का वर्णन चार प्रमुख संहिताओं चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, अष्टांग हृदय और अष्टांग संग्रह में विस्तार से किया गया है। इन संहिताओं में विभिन्न रोगों की पहचान, उपचार और रोकथाम के लिए विस्तृत निर्देश दिए गए हैं। सुश्रुत संहिता में प्लास्टिक सर्जरी और मोतियाबिंद जैसी जटिल सर्जरी समेत अन्य शल्यक्रियाओं का जिक्र है। वाग्भट रचित अष्टांग हृदय व अष्टांग संग्रह, चरक और सुश्रुत संहिता के सिद्धांतों को समेकित और संशोधित करते हैं। दूसरे सत्र में उसी संस्थान के रसशास्त्र विभाग के अति. प्रोफेसर प्रो. गालिब ने "डेटाबेस फॉर लिटरेचर सर्च–एन इन्ट्रोडक्शन" विषयक व्याख्यान में बताया कि अकादमिक व शोध कार्यों में लिटरेचर सर्च का महत्वपूर्ण रोल है। उन्होंने कहा कि डाटाबेस के उपयोग से पहले यह तय करें कि आपकी खोज के लिए कौन सा डाटाबेस सबसे उपयुक्त है और फिर अपनी खोज के लिए सही कीवर्ड का चयन करें।

पर्यावरण दिवस पर वनौषधि उद्यान में वृक्षारोपण

कुलपति प्रो. (वैद्य) प्रदीप कुमार प्रजापति ने पर्यावरण दिवस के अवसर पर वनौषधि उद्यान में छः पीपल के पौधे तथा इसी अवसर पर वट सावित्री अमावस्या होने से पांच बरगद के पौधे भी रोपे। इस प्रकार कुल 11 पौधे रोपे गए। प्रो. प्रजापति ने कहा कि प्रकृति एवं पर्यावरण को बचाने के लिए वृक्षारोपण कर आम जनमानस को जागरुक करने की आवश्यकता है। वट सावित्री अमावस्या जैसे विशेष दिन पर वृक्षारोपण कर पुण्य अर्जित करना चाहिए।

प्रो. सतीश वत्स का व्याख्यान आयोजित

दिनांक 7 जून 2024 को सीएचआरडी द्वारा आयोजित व्याख्यानमाला के प्रथम सत्र में प्रो. सतीश वत्स, विभागाध्यक्ष, रचना शरीर, IASR, FOA, श्रीकृष्ण आयुष विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र ने Physio-anatomical Elaboration of Sushrutokta Sira Vibhakti Sharir विषय पर व्याख्यान में बताया कि सुश्रुत संहिता में शरीर के मांस, तंत्रिकाओं, अस्थि, मज्जा एवं त्वचा आदि विभिन्न अंगों एवं कार्यों के आधार पर सिराओं का विस्तार से वर्णन करते हुए उनकी संरचना एवं कार्यों के अनुसार वर्गीकृत किया गया है। यह ज्ञान चिकित्सा में उचित रक्त प्रवाह, घाव भरने और रक्त विकार निदान के लिए सहायक है। दूसरे सत्र में An Overview of Venous Components of Human Body विषयक व्याख्यान में उन्होंने बताया कि मानव सिराएं रक्त परिसंचरण तंत्र के लिए महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि वे ऊतकों से हृदय तक ऑक्सीजन रहित रक्त पहुंचाती हैं। ये शिराएं रक्त के पुनःसंचार, पोषक तत्वों के परिवहन और शरीर के तापमान को नियंत्रित करने में मदद करती हैं।

प्रो. मीता कोटेचा एवं डॉ. राकेश नागर के अतिथि व्याख्यान का आयोजन

दिनांक 8 जून 2024 को सीएचआरडी द्वारा आयोजित व्याख्यानमाला के प्रथम सत्र में एनआईए, जयपुर की पूर्व प्रो–वाईस चान्सलर एवं विश्वविद्यालय की लोकपाल प्रो. मीता कोटेचा ने आयुर्वेद आहार एवं आहार संस्कार पर व्याख्यान में बताया कि आयुर्वेद में आहार एवं आहार संस्कार केवल भोजन तक सीमित नहीं है। ये जीवन की समग्रता का एक हिस्सा है, जिसमें शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का संतुलन बनाए रखना महत्वपूर्ण है। अतः आहार न केवल पोषण का स्रोत है, बल्कि उपचार और रोग निवारण का भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। दूसरे सत्र में एनआईए जयपुर के बालरोग विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. राकेश नागर ने बाल चिकित्सा में कुपोषण की रोकथाम में आयुर्वेद संस्थानों की भूमिका विषय पर व्याख्यान में कहा कि कुपोषण एक गंभीर समस्या है, खासकर बाल चिकित्सा में। यह समस्या बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास को प्रभावित करती है। प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद पारंपरिक और प्राकृतिक तरीकों से इस चुनौती का समाधान प्रदान कर सकती है। इस अवसर कार्यक्रम में कुलपति प्रो. (वैद्य) प्रदीप कुमार प्रजापति भी उपस्थित थे।

मानसागर उद्यान, महामंदिर में योगाभ्यास आयोजित

अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस–2024 के उपलक्ष में आयोजित की जा रही गतिविधियों के अन्तर्गत आमजन की स्वास्थ्य सुरक्षा हेतु मानसागर उद्यान, महामंदिर में विश्वविद्यालय के योग विशेषज्ञों द्वारा प्रातः 6 बजे से 7 बजे तक नियमित योगाभ्यास करवाया जा रहा है। इसमें शिविर प्रभारी सहायक आचार्य श्री सतीश ठाकुर, डॉ. मार्कण्डेय व स्वस्थवृत्त पीजी अध्येताओं डॉ. संतरा व डॉ. अंजलि सोनी व यूनिवर्सिटी प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग महाविद्यालय की छात्राओं भाविका चौहान, लक्षिता शर्मा, हर्षिता पवार एवं गर्वित ने अपनी सेवाएं दी।

सीएचआरडी द्वारा आयोजित व्याख्यानमाला सम्पन्न

विश्वविद्यालय मानव संसाधन विकास केन्द्र (सीएचआरडी) द्वारा ग्रीष्मकालीन शैक्षणिक अवकाश के दौरान आयोजित एक मासीय डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् व्याख्यानमाला का दिनांक 10 जून 2024 को समापन कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम के आरम्भ में सीएचआरडी के निदेशक डॉ. राकेश कुमार शर्मा ने व्याख्यानमाला का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम अध्यक्ष कुलपति प्रो. (वैद्य) प्रदीप कुमार प्रजापति ने संकाय सदस्यों व विद्यार्थियों निर्देशित करते हुए कहा कि आप अपनी क्षमता को पहचानें और समाज के स्वास्थ्य संरक्षण में योगदान दें। उन्होंने व्याख्यानमाला के उद्देश्यों के बारे में बताते हुए कहा कि इसमें विभिन्न विषयों पर प्रदत्त अद्यतन एवं गहन जानकारी से विद्यार्थियों एवं शिक्षकों दोनों का ज्ञान समृद्ध होता है। विभिन्न सोच, नवाचार एवं रुझान विकसित करने के साथ–साथ व्याख्यानमाला विद्यार्थियों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा उन्हें भविष्य की चर्चाओं के लिए तैयार करती है। उन्होंने विद्यार्थियों से व्याख्यानमाला के बारे में फीडबैक भी लिया जो काफी अच्छा एवं रोचक रहा। इस अवसर पर सभी आयोजन समिति सदस्यों को प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में पीजीआईए प्राचार्य प्रो. महेन्द्र शर्मा, प्राचार्य, यूसीएच जोधपुर डॉ. गौरव नागर, प्राचार्य, यूसीएनवाईएस डॉ. चन्द्रभान शर्मा सहित पीजीआईए, होम्योपैथी महाविद्यालय, योग, नेचुरोपैथी महाविद्यालय जोधपुर, यूनानी महाविद्यालय टोंक एवं होम्योपैथी महाविद्यालय केकड़ी के विभागाध्यक्ष, शिक्षक, पीजी अध्येता उपस्थित रहे।

जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय के सायंकालीन अध्ययन संस्थान में निशुल्क योग शिविर का शुभारंभ

अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस–2024 के उपलक्ष में आयोजित की जा रही गतिविधियों के अन्तर्गत विश्वविद्यालय द्वारा जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय (जेएनवीयू) के सायंकालीन अध्ययन संस्थान में 21 जून 2024 तक चलने वाला निशुल्क योग शिविर कुलपति प्रो. (वैद्य) प्रदीप कुमार प्रजापति एवं जेएनवीयू कुलपति प्रो. के.एल. श्रीवास्तव के मुख्य आतिथ्य में प्रारम्भ किया गया। यूसीएनवाईएस, जोधपुर के प्राचार्य डॉ. चंद्रभान शर्मा ने बताया कि इस योग सत्र में यूसीएनवाईएस के सहायक प्रोफेसर डॉ मार्कंडेय बारहठ ने प्रतिभागियों को प्रमुख आसनों का अभ्यास कराया, जिसमें सूर्य नमस्कार, वज्रासन, ताड़ासन, भुजंगासन एवं शवासन शामिल थे। प्रो. प्रजापति ने अपने संबोधन में योग के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं है, यह संपूर्ण जीवनशैली है जो हमारे मन, शरीर एवं आत्मा को संतुलित करती है। आज के सत्र के माध्यम से हम सभी को योग के इन गुणों को अपनाने एवं स्वस्थ जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है। जेएनवीयू कुलपति ने भी योग के लाभों पर अपने विचार साझा किए और कहा, योग हमारे जीवन को तनाव मुक्त और स्वस्थ बनाता है। इसे नियमित रूप से करने से हम अपने दैनिक जीवन की चुनौतियों का सामना अधिक ऊर्जा और उत्साह के साथ कर सकते हैं।

क्षारसूत्र पाठ्यक्रम प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरण

क्षार सूत्र चिकित्सा में सेमी ऑनलाइन स्नातकोत्तर प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम के वर्ष 2024 के प्रथम बैच के अंतिम ऑफलाइन सत्र में देश के विभिन्न राज्यों से आए अभ्यर्थियों को दिनांक 15 जून 2024 को कुलपति प्रो. (वैद्य) प्रदीप कुमार प्रजापति द्वारा प्रमाण पत्र वितरित किए गए।

प्रो. राजेश कुमार गुप्ता ने बताया कि पीजीआईए के शल्य तंत्र विभाग द्वारा क्षार सूत्र चिकित्सा में संचालित सेमी ऑनलाइन स्नातकोत्तर प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम के लिए पूरे देश से कुल 24 अभ्यर्थियों का चयन हुआ। इनको ऑनलाइन कक्षाएं पूर्ण होने के पश्चात ऑफलाइन प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया भी दिया गया। इसके साथ ही शल्य चिकित्सा विभाग द्वारा संचालित क्षारकर्म टेक्नीशियन पाठ्यक्रम के अभ्यर्थियों को प्रमाण पत्र भी वितरित किए गए।

कुलपति की उपमुख्यमंत्री एवं आयुष मंत्री, राजस्थान सरकार से शिष्टाचार भेंट

दिनांक 18 जून 2024 को कुलपति प्रो. (वैद्य) प्रदीप कुमार प्रजापति ने माननीय उपमुख्यमंत्री एवं आयुष मंत्री महोदय, राजस्थान सरकार से शिष्टाचार भेंट की। इस अवसर पर बारह घंटे अखंड शशांक भुजंगासन के पोस्टर का भी विमोचन किया गया। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य संवर्धन हेतु नित्य प्रति प्रत्येक व्यक्ति को योग, प्राणायाम करने की आवश्यकता है।

इस अवसर पर कुलपति ने उपमुख्यमंत्री को बताया कि दसवें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष में 21 जून 2024 को जोधपुर के ऐतिहासिक स्थल घंटाघर पर विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं छात्र–छात्राओं द्वारा प्रातः नौ बजे से रात्रि नौ बजे तक बारह घंटे का गत्यात्मक शशांक भुजंगासन का अभ्यास कर विश्व रिकॉर्ड बनाया जाएगा।

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर गत्यात्मक शशांक भुजंगासन अभ्यास का विश्व रिकार्ड बनाया

10 वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर शुक्रवार 21 जून को जोधपुर का ऐतिहासिक घंटाघर विश्व रिकॉर्ड का साक्षी बना। सुबह 9.30 से रात्रि 9.30 बजे तक लगातार 12 घंटे तक विश्वविद्यालय के शिक्षकों व छात्र–छात्राओं ने गत्यात्मक शशांक भुजंगासन का सतत अभ्यास कर विश्व रिकॉर्ड बनाया। गत वर्ष 2023 में भी विश्वविद्यालय ने सूर्य नमस्कार का विश्व रिकॉर्ड बनाया था। इस दौरान राजस्थान सरकार के कैबिनेट मंत्री जोगाराम पटेल व विधायक श्री अतुल भंसाली ने कुलपति सहित तमाम विश्वविद्यालय परिवार को रिकार्ड बनाने पर बधाई दी। इस अवसर पर कुलपति प्रो. (वैद्य) प्रदीप कुमार प्रजापति ने बताया कि विश्वविद्यालय के योग विशेषज्ञों ने योग के प्रति लोगों को जागरुक करने के लिए 16 अलग–2 स्थानों पर निर्धारित योग प्रोटोकॉल का अभ्यास करवाया। वर्तमान में अधिकांश महिलाएं कई तरह की बीमारियों से ग्रसित रहती हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए इस

आसन का एक पैकेज बनाया गया, जिसके अभ्यास से हमारे आने वाली पीढ़ी निरोगी हो सके।

अंतरराष्ट्रीय नशा निषेध और अवैध तस्करी विरोध दिवस के उपलक्ष्य में व्याख्यान का आयोजन

नार्कोटिक कंट्रोल ब्यूरो एवं पीजीआईए के स्नातकोत्तर अगद तंत्र विभाग के संयुक्त तत्वावधान में अंतरराष्ट्रीय नशा निषेध और अवैध तस्करी विरोधी दिवस के उपलक्ष्य में व्याख्यान का आयोजन कुलसचिव प्रो. गोविंद सहाय शुक्ल एवं एनसीबी के सहायक निदेशक नितिन कुमार चौबे, प्राचार्य प्रो. महेन्द्र शर्मा एवं नशामुक्ति इकाई प्रभारी डॉ. ऋतु कपूर की उपस्थिति में किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता एनसीबी के सहायक निदेशक नितिन कुमार चौबे ने कहा कि हर वर्ष 26 जून को अवैध तस्करी रोकने एवं नशा नहीं करने के प्रति जागरुक किया जाता है। कुलसचिव प्रो. शुक्ल ने इस अवसर उपस्थित सभी प्रतिभागियों को नशा नही ंकरने हेतु प्रेरित किया।

विश्वविद्यालय के शिक्षकों द्वारा देश के विभिन्न क्षेत्रों में विशेष प्रशिक्षण हेतु सहभागिता

नेशनल कमिशन फॉर इंडियन सिस्टम ऑफ मेडिसिन (NCISM), नई दिल्ली एवं नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर माइक्रो, स्मॉल एंड मीडियम एन्टरप्राइसेस (NI-MSME) हैदराबाद के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 24 जून से 28 जून तक आयोजित ट्रेनिंग ऑफ ट्रेनर्स ऑन एन्टरप्रेनिऑरशिप डवलपमेंट कार्यक्रम में प्रो. हरीश कुमार सिंघल, विभागाध्यक्ष कौमारभृत्य विभाग ने भाग लिया। इसी प्रकार NCISM, नई दिल्ली द्वारा जेएस आयुर्वेद महाविद्यालय, नडियाड में दिनांक 27 जून से 29 जून तक आयोजित साइंटिफिक राइटिंग, रिसर्च इन्टेग्रिटी एन्ड पब्लिकेशन एथिक्स फॉर पीजी गाइड वर्कशॉप में डॉ. राकेश कुमार शर्मा, निदेशक मानव संसाधन विकास केन्द्र ने भाग लिया।

विटिलीगो डे पर जागरुकता शिविर आयोजित

यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ होम्योपैथी, जोधपुर द्वारा 25 जून को मण्डोर गार्डन, जोधपुर में विश्व विटिलीगो डे जागरुकता दिवस के अवसर पर जागरुकता शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर होम्योपैथी विशेषज्ञ चिकित्सक डॉ. अभिषक भारद्वाज एवं डॉ. राकेश कुमार मीना ने लगभग 230 लोगों को विश्व विटिलीगो डे के महत्व व लक्षण, उपचार एवं सामाजिक भ्रांतियों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने राज्य एवं केन्द्र सरकार द्वारा संचालित कार्यक्रमों के बारे में जागरुक किया तथा विटिलीगो के होम्योपैथिक उपचार व रोग प्रबंधन के बारे जानकारी दी।

होम्योपैथी चिकित्सा शिविर का आयोजन

दिनांक 26 जून 2024 को माणकलाव, जोधपुर में आयोजित निःशुल्क होम्योपैथी चिकित्सा शिविर में होम्योपैथी विशेषज्ञ चिकित्सक डॉक्टर प्रियंका कपूर एवं डॉक्टर राकेश कुमार मीना ने अपनी सेवाएं दी। इस शिविर में 60 ग्रामवासियों को निःशुल्क होम्योपैथिक औषधियां देकर

लाभान्वित किया गया ।

इसी प्रकार दिनांक 28 जून 2024 को मण्डोर गार्डन, जोधपुर में आयोजित निःशुल्क होम्योपैथी चिकित्सा शिविर में होम्योपैथी विशेषज्ञ चिकित्सक डॉ. शैलेन्द्र प्रताप राव, डॉ. इण्डिया डागर एवं प्रशिक्षु दिव्या चौहान, सहायक बेबी कंवर ने अपनी सेवाएं दी।

कन्हैया गौशाला में वत्सल आरोग्य शिविर प्रारम्भ

जोधपुर में कन्हैया गौशाला में विश्वविद्यालय द्वारा पांच दिवसीय वत्सल आरोग्य शिविर दिनांक 28 जून 2024 को शुरू हुआ। इस संपूर्ण शिविर का आयोजन श्री कन्हैया गौशाला के अध्यक्ष राजकुमार भंडारी के सहयोग से किया गया। यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ नैचुरोपैथी एंड योगिक साइंस के प्राचार्य वैद्य चंद्रभान शर्मा ने बताया कि शिविर में आसन प्राणायाम, ध्यान एवं प्राकृतिक चिकित्सा सहित प्राकृतिक चिकित्सा की विभिन्न विधाओं मिट्टी तथा जल चिकित्सा, रिफ्लेक्सोलॉजी, एक्यूप्रेशर आहार संबंधी जानकारी दी गई। शिविर में महाविद्यालय के सहायक प्रोफेसर सतीश ठाकुर एवं डॉ. मारकण्डेय बारहठ व नर्सिंग कर्मी अवकाश चौधरी ने सेवाएं दी।

ग्रामीणों को नशा मुक्ति हेतु किया जागरुक

गोद ग्राम भटिंडा में दिनांक 29 जून 2024 को एक दिवसीय नशा मुक्ति चिकित्सा एवं जागरुकता शिविर तथा माह जून के विशिष्ट कार्यक्रम "ग्रामवासियों में जल संरक्षण का महत्व" विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। माननीय राज्यपाल द्वारा प्रदत्त निर्देशों की अनुपालना में ग्राम को नशा मुक्त करने के लिए वृहत स्तर पर अभियान शुरू किया गया है जिसके तहत विश्वविद्यालय की नशा मुक्ति इकाई द्वारा समय–समय पर निःशुल्क शिविर, जागरुकता व्याख्यान एवं रैली के आयोजन किए जा रहे हैं। नशा मुक्ति विशेषज्ञ एवं शिविर प्रभारी डॉ. प्रवीण प्रजापति ने शिविर में आये अफीम, डोडा, स्मैक, शराब, तंबाकू आदि के मरीजो को परामर्श देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय की नशा मुक्ति इकाई में सभी व्यसनों के रोगियो के लिये भर्ती, दवाई, पंचकर्म एवं भोजन की निःशुल्क सुविधा उपलब्ध है। शिविर में डॉ मार्कन्डेय बारहठ, स्नातकोत्तर अध्येता डॉ. वैभव नरवाडे एवं नर्सिंग कर्मी दिनेश चौधरी ने सेवा दी।

एक पेड़ माँ के नाम अभियान के तहत वृक्षारोपण

माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति महोदय द्वारा प्रेरित एक पेड़ माँ के नाम अभियान के अंतर्गत मानसून की पहली बारिश में सघन वृक्षारोपण के अंतर्गत आयुर्वेद विश्वविद्यालय परिसर में दिनांक 29 जून 2024 को वृक्षारोपण किया गया। इस दौरान निर्माणाधीन इन्टरनेशनल पंचकर्म एक्सीलेंस सेंटर के पास बांस के पांच वृक्षों, प्रशासनिक खण्ड से छात्रा–छात्रावास के बीच 70 निर्गुण्डी के वृक्ष एवं बादाम रोड़ पर बादाम के पौधों का रोपण स्वच्छ एवं संरक्षित पर्यावरण के लिए मानसून की पहली बारिश में कुलपति प्रो प्रजापति एवं उनके परिवारजनों, कुलसचिव प्रो गोविंद सहाय शुक्ल, छात्र कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष प्रो गोविन्द प्रसाद गुप्ता, उप कुलसचिव डॉ. मनोज अदलक्खा, डीन रिसर्च प्रो. देवेन्द्र सिंह चाहर एवं मीडिया प्रभारी प्रो. दिनेशचन्द्र शर्मा सहित विभिन्न संकाय सदस्यों द्वारा किया गया।

संरक्षक
प्रो. (वैद्य) प्रदीप कुमार प्रजापति
कुलपति

उप संरक्षक
प्रो. गोविन्द सहाय शुक्ल
कुलसचिव

सम्पादक
डॉ. राकेश कुमार शर्मा
निदेशक, मानव संसाधन विकास केन्द्र

सह–सम्पादक

डॉ. हरीश कुमार सिंघल
एसोसियेट प्रोफेसर, कौमारभृत्य

डॉ. अरुण दाधीच
एसोसियेट प्रोफेसर, रोग व विकृति विज्ञान

डॉ. मोनिका वर्मा
एसोसियेट प्रोफेसर, मौलिक सिद्धान्त

डॉ. भानुप्रिया चौधरी
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, काय चिकित्सा

डॉ. हेमन्त कुमार
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, प्रसूति तंत्र एवं स्त्री रोग

डॉ. अशोक कुमार यादव
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, कौमारभृत्य

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय
कड़वड़, नागौर रोड, राष्ट्रीय राजमार्ग सं. 65, जोधपुर (राज.)
Phone : 0291-2795312, Fax : 0291-2795300
E-mail : rau_jodhpur@yahoo.co.in
Website : https://department.rajasthan.gov.in/home/dptHome/221

स्वामी डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जोधपुर के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. राकेश कुमार शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, रचना शारीर विभाग द्वारा भण्डारी प्रिन्टसिटी, 23–ए, इण्डस्ट्रीयल एरिया गली नं. 1, न्यू पावर हाउस के पीछे, डीजल शेड, जोधपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित ।
सम्पादक : डॉ. राकेश कुमार शर्मा

भारत सरकार की सेवार्थ

प्रिण्टेड बुक

सेवा में

....

....

....

....